श्री काशी-खण्ड

अध्याय ६८ से ७०

तवासेश्वर, हंस व मत्स्योदरी-तीर्थ

लेखक—वैकुण्ठनाथ उपाध्याय

श्री काशी खण्ड

अध्याय ६८ से ७०

कृत्तिवासेश्वर, हंसतीर्थ व मत्स्योदरी तीर्थ

लेखक

वैकुण्ठनाथ उपाध्याय

हर ! हर ! हर ! महादेव !

बाबा 'विश्वनाथ' के प्रतीक, काशिराज महाराज

श्री विभूतिनारायण सिंहजी

को सादर-समर्पित

काशी के गौरव वेदमूर्ति
विद्वच्छिरोमणि शास्त्ररत्नाकर वाचस्पति पद्मभूषण
पण्डितराज श्रीराजेश्वर शास्त्री द्राविड़

आमुख

॥ श्री गुरुः शरणम् ॥

प्रस्तुत अंक के ६८ वें अध्याय में 'हंसतीर्थ' पर घटी घटना से स्पष्ट है कि उस समय लोकमत ने यह निर्णय लिया कि यदि कौए इस तीर्थ के जल-स्पर्श से निर्मल होकर हंस हो सकते हैं तो हम मनुष्य भी इसमें स्नान कर अपने मन के कलुष को समाप्त कर अपनी आत्मा को निर्मल बना सकते हैं यह वास्तविक निर्णय प्रतीत होता है।

आज कुछ नासमझ लोग हमारे गुरुजनों, सन्तों और ऋषियों के प्रति निन्दा करते हुए पूर्व-पक्ष रखते हैं ऐसा करना घोर पाप है। कुछ लोगों का कहना है कि हमारे पतंजलि आदि ऋषियों ने सिद्धियों की लालच देकर सबको योग की ओर खींचा। महात्मा बुद्ध ही सच्चे योगी थे, वह निर्विकार थे। उन्होंने लोगों को प्रलोभन नहीं दिया आदि।

इस संबंध में जहाँ तक हमारे महर्षि का प्रश्न है वहाँ यही कहना होगा कि उन्होंने स्वयं कहा है कि

"ते समाधावुपसर्गा व्युत्थाने सिद्धयः"

"स्थान्युपनिमन्त्रणे सङ्गस्मयाकरणं पुनरनिष्टप्रसङ्गात्"

(पातञ्जलयोगदर्शन विभूतिपाद)

अर्थात् लोग ऐसी सिद्धियों की ओर न जाएँ। ऐसा करने से साधक मध्यमावस्था में ही रह जायगा और लक्ष्य सिद्धि दूर ही रह जाएगी तथा घोर बंधन में वे रहेंगे। विवेक ही सत्वगुण है। सिद्धि में रहने वाले को 'मनो-विकार' से छुटकारा होगा ही नहीं।

बौद्ध-ग्रंथ दशरथ जातक में सीता जी को राम की बहन कहा गया है और इस प्रकार बहन-भाई के विवाह की पुष्टि किया गया है। प्रश्न है कि यह 'मनोविकार' कहा जाएगा या निर्विकारिता के ये लक्षण हैं।

हम बुद्ध को खराब नहीं कहते। जिस परिस्थिति में वे थे उन्होंने वैसा किया। हम उनका विरोध नहीं करते। अपने भारतीय राजनीति में 'गुप्तचरों' का पद सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। उस पद पर उन्हें प्रतिष्ठित

कर भारत से बाहर भेजा गया कि बाहर के लोगों को वेद सम्मत स्वकीय धर्म में रखने की सुरक्षा करते हुए देश की मर्यादा को उन्होंने अक्षुण्ण बनाए रखा। वैदिक धर्म में फूट डाली न जाए इसका उपाय किया गया।

उन्होंने बाहर जाकर चीन, जापान आदि में अपना प्रचार भारत की सीमाओं में रहते हुए किया और अपने अनुकूल बनाते हुए उन अमूर्ति पूजकों को मूर्ति-पूजाकी ओर आकर्षित किया चाहे वह बुद्ध की ही मूर्ति क्यों न हों। उनके इस महान् कार्य की हम सराहना करते हैं।

बौद्ध लोगों ने हमारे 'वेदों' को अपौरुषेय मान लिया है। बौद्ध विद्वान वाग्भट्ट ने 'अथर्ववेद' की ऋचाओं को प्रमाण मानते हुए 'आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार ही 'रसायन' को पवित्र एवं गुणकारी माना है। उन्होंने वैदिक संस्कारानुसार प्रायश्चित करके ही 'रसायन' अनुष्ठान किया है तथा उसे ही ग्रहण करने में कल्याण समझा है।

पुण्य और पाप अतीन्द्रिय हैं इनका प्रत्यक्षीकरण नहीं हो सकता। इनका निर्णय तो वेद ही करता है। इस प्रकार से हम यह मानते है कि बौद्धों ने हमारे देश का बहुत बड़ा उपकार किया है। सारी गड़बड़ियाँ नासमझ लोग ही करते हैं।

धर्म (वैदिक धर्म) को मानकर चलने में ही हमारा और देवभूमि भारत देश का कल्याण है। धर्म मार्ग पर चलने से ही हमारे मनोविकार दूर होंगे और हमारा मन कलुषों से स्वच्छ हो 'हंस' के समान निर्मल होगा। हमें 'विवेक श्रुति सम्पत्ति गुरु भक्ति तपस्विता, के संकल्प में आना होगा तदनुसार आचरण करना होगा तभी हम वास्तविक रूप से स्वतन्त्र रहते हुए अपना, अपने वंश और समाज का हित कर सकेंगे।

काशी खण्ड के भाषान्तरकर्त्ता श्री वंकुण्डनाथ उपाध्याय को हम आशीर्वाद देते हैं कि वह उक्त संकल्प में रहते हुए भगवत् कार्य में लगे रहें यही भगवान् विश्वनाथ से प्रार्थना है।

—श्री राजेश्वर शास्त्री द्राविड़

निवेदन

वेद, शास्त्र, पुराणादि के संस्कार ही वास्तव में भारतीय धर्म हैं। बड़े से बड़े नास्तिक लोग भी भारतीय धर्म के इस चमत्कार को देखकर स्तब्ध रह जाते हैं। भारतीय धर्म की कुंजी ही 'विवेक श्रुति सम्पत्ति गुरुभक्ति तपस्वित्वा में निहित है।

वेद की महत्ता अभी भी अक्षुण्ण दिखाई दे रही है अभी-अभी करोड़ों व्यक्तियों को विगत माघ कृष्ण चतुर्दशी व अमावास्या (१८ व १९ जनवरी) को तीर्थराज प्रयाग में कुम्भ पर्व के अवसर पर देखा गया।

बिना निमन्त्रण दिये करोड़ों की संख्या में नर-समूह चींटी की भांति तीर्थ राज प्रयाग में चला जा रहा था, मात्र 'त्रिवेणी' के तट पर जल स्पर्श कर एक गोता लगाने के लिए। यह दृश्य देखने के लिए प्रत्यक्षानुमानवादी लोगों ने भी विदेशों से आकर भारत के सुदृढ़ सांस्कृतिक संगठन की झाँकी का दर्शन किया और वे चमत्कृत हुए। इस दृश्य की अनेकानेक झाँकियों का चित्र (फिल्म) लेकर तथा समाचारों के माध्यम से उन्होंने अपने देशों को अवगत कराया कि भारतीय जनता का अपने धर्म-ग्रंथो पर कितना अटूट विश्वास है कि अपने घर का सुख वैभव छोड़, कड़ाके की सर्दी सहन करते हुए, वर्षा में भींगते-ठिठुरते हुए, लुड़कते-पुड़कते आबाल वृद्ध त्रिवेणी तीर्थ में जल स्पर्श कर पुण्य अर्जित करने हेतु लोग गये। यह चमत्कार विश्व में बेजोड़ है। इतना बड़ा समूह धार्मिक परिवेश में, भारतीय साधुओं की सदाचार परम्परा को प्रमाणित करता है। इन्हीं कारणों से आज विदेशी भी वेदानुमोदित स्व-धर्म के प्रति आस्थावान् ही झुक रहे हैं।

इतना बड़ा प्रमाण होते और देखते हुए भी लोग पुराण-वाक्यों की आलोचना करते हुए रामायण व महाभारत आदि को काल्पनिक कहते हुए इतने बड़े जनसमुदाय को भेद नीति का शिकार बना रहे हैं यह घोर लज्जा की

वात है। ऐसे लोगों को ही दृष्टि रहते हुए भी अन्धा कहा जाता है। ये लोग ही अनर्गल प्रचार कर लोगों को स्वधर्म मार्ग से विघटित करने का जघन्य पाप करते हैं।

आज सर्वत्र तीर्थों के प्रति अनादर का भाव व्यक्त किया जा रहा है। काशी देव समूहों और तीर्थ समूहों के बल पर ही त्रैलोक्य से न्यारी कही गयी है। यहाँ के तीर्थों को पहले तो भ्रष्ट किया जाता है बाद में उन्हें अनुपयोगी कहते हुए कूड़े आदि से पाट कर बाद में उनका ही अस्तित्व समाप्त किया जाता है।

जैसा कि इस अंक के ६९ व ७० वें अध्याय में अनेक तीर्थों का वर्णन आया है, उनके स्पर्श का फल कितना महत्वपूर्ण कहा गया है यह सब होते हुए भी दुःख का विषय है कि उनमें से दो चार तीर्थ ही नाम मात्र को शेष रह गये हैं। हंस-तीर्थ देखते-देखते पट गया जिस तीर्थ के जल-स्पर्श से काले कौए हंस हो गये आज तक लोग अपने कलुषित मन को निर्मल करते रहे उसका अस्तित्व औरंगजेब के काल में नहीं पर आज समाप्त कर दिया गया यह घोर कष्टदायक है।

जो होना था सो हो गया। अब निवेदन है कि काशी के शेष तीर्थों की प्राण-पण से रक्षा करना हमारा धर्म-कर्म है। काशी के तीर्थ काशी के ही नहीं अपितु हमारी धार्मिक धरोहर हैं ये तीर्थ विश्व के मानवों का कल्याण करने में सक्षम हैं अतः इनका रक्षण करना राष्ट्र रक्षण के समान पुनीत कर्त्तव्य है। इन तीर्थों को राष्ट्रीय सम्पत्ति मानकर इनकी रक्षा करना चाहिए।

आज से पाँच वर्ष पूर्व महाराज काशिराज ने तीर्थों के प्रति चिन्ता व्यक्त करते हुए राज्य के तत्कालीन मुख्य मंत्री पं० कमलापति त्रिपाठी जी से अपने शिवाला स्थित दुर्ग में ग्रंथ विमोचन के अवसर पर कहा था कि "काशी के तीर्थों की रक्षा राष्ट्रीय स्तरपर की जानी चाहिए। ये तीर्थ राष्ट्र की सम्पत्ति हैं।" काशिराज की वेदना की ओर ध्यान देना हम सब का कर्त्तव्य है।

काशी में शेष तीर्थों के अस्तित्व की रक्षा करते हुए अनधिकारियों के हाथ से उन्हें मुक्त कराते हुए उनकी शुचिता की मर्यादा को स्थिर करना आज परमावश्यक है।

इन शब्दों के साथ आज महा शिवरात्रि के पुण्य पर्व पर काशी के गोदावरी तीर्थ (जो अब नहीं रहा) पर स्थित महर्षि गौतम की तपो भूमि में महर्षि द्वारा प्रतिष्ठापित भगवान गौतमेश्वर के समक्ष श्रीविश्वनाथ के प्रतीक महाराज काशिराज को यह उन्नीसवीं पुष्पांजलि अर्पित करते हुए मुझे महान प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

भगवान् विश्वनाथ इसी भाँति शेष तीस अध्याय के अनुवाद को पूर्ण करने की सामर्थ्य प्रदान करें यही कामना है।

—वैकुण्ठ नाथ उपाध्याय

धन्यवाद

श्रुतिप्रसिद्ध काशिराज महाराजाधिराज श्री विभूतिनारायण सिंह जू देव के हम चिर ऋणि हैं। महाराजश्री ने पूर्व की भाँति इस १९ वें भाग का प्रकाशनोद्घाटन अपने कर कमलों द्वारा करना स्वीकार किया।

इस अवसर पर हम प्रातः स्मरणीय वेदमूर्ति पण्डितराज श्रीराजेश्वर शास्त्री द्राविड़ जी महाराज को प्रणाम है। आपकी कृपा सदा की भाँति बनी रहे यही कामना है। १९ वाँ भाग में पं० विश्वनाथ शास्त्री दातार, पं० जनार्दनशास्त्री पाण्डेय, पं० उदयकृष्ण नागर के हम विशेष आभारी हैं उनके सहयोग के लिए धन्यवाद है।

'आज' प्रेस व 'जनवार्ता' प्रेस के हम अत्यन्त आभारी हैं जिनके सहयोग से नौ दुर्गा व नौ गौरी का चित्र ब्लाक हमें प्राप्त हुआ।

अंक के प्रकाशन में श्रीराधेश्याम जी खेमका, चित्रकार श्रीमन्नूसिंह छविकार पं० शत्रुघ्नजी व्यास, श्री अन्नपूर्णा ब्लाक वर्क्स तथा श्री काली प्रसाद के हम आभारी हैं जिन्होंने समय से ग्रन्थ तैयार करने अथक सहयोग दिया।

—रामनारायण उपाध्याय

विषय-सूची

श्री कृत्तिवासेश्वर

श्री ॐकारेश्वर

चैत्र नौरात्र में ९ गौरी

१ – मुखनिर्मालिका गौरी

२ – ज्येष्ठा गौर

३ – सौभाग्य गौरी
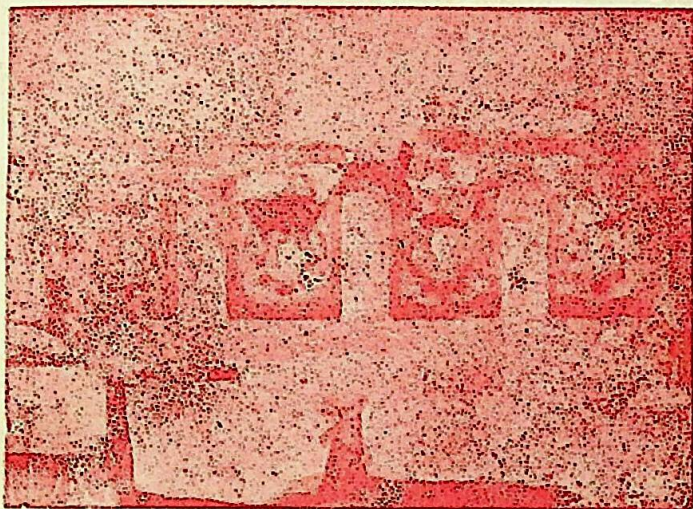
४—शृंगार गौरी

५—विशालाक्षी गौरी
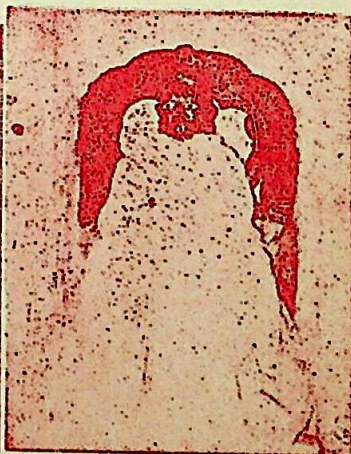
६—ललिता गौरी

७—भवानी गौर
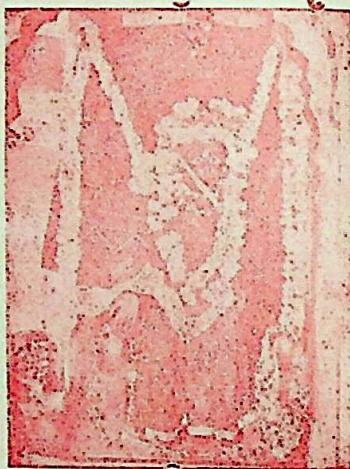
८—मंगला गौरी
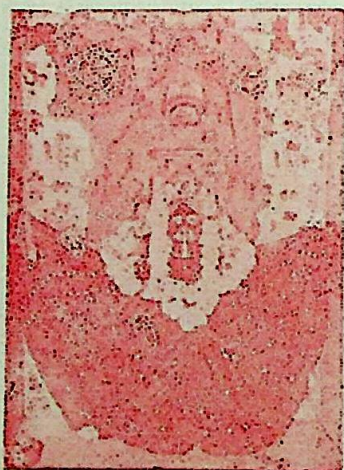
शारदीय नौरात्र की ९ दुर्गा

१—श्री शैलपुत्री दवी

२–श्री ब्रह्मचारिणी देवी

३—श्री चित्रघण्टा देवी

४—श्रीकूष्माडा देवी (दुर्गाजी)

५—श्री स्कन्द माता

६—श्री कात्यायिनी देवी

७—श्रीकालरात्रि (कालीजी) ८—श्री महागौरी
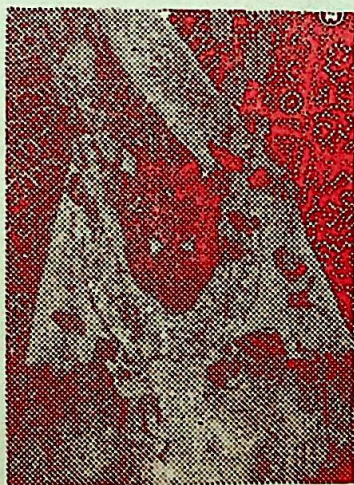
९—श्री सिद्धमाता

श्री स्वामिनारायण मन्दिर में
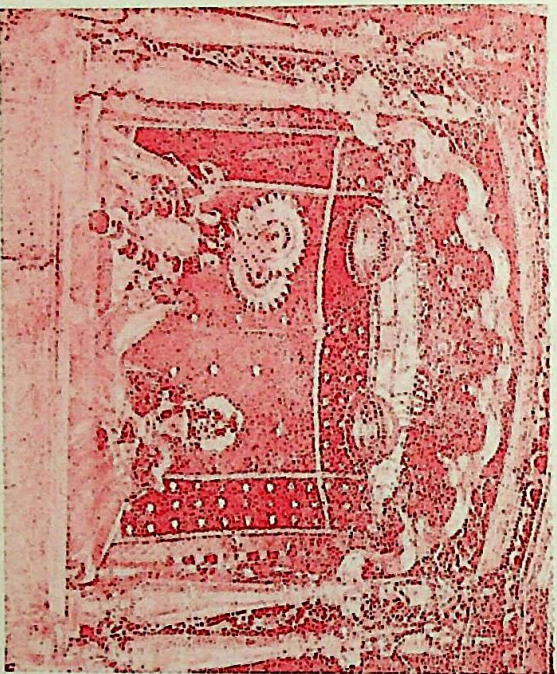
श्री शंकर व पार्वती देवी

श्री स्वामिनारायण व श्री विष्णु, श्री लक्ष्मी

श्री गणेशाय नमः

अध्याय ६८

कृत्तिवासेश्वर और हंस तीर्थ

विश्वेशं माधवं ढुण्ढि दण्ड पाणीं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥

श्री स्कन्द जी ने आगे का वर्णन करते हुए कहा कि हे महाभाग ! अगस्त्य ऋषे ! रत्नेश्वर के समीप एक और विलक्षण घटना घटी है उस वृत्तांत को भी आप सुनें ।

जिस समय भगवान् शंकर 'रत्नेश्वर' का वर्णन कर रहे थे उसी समय 'वचाओ-वचाओ' की ध्वनि उन्हें सुनाई पड़ी । इस कोलाहल का कारण यह था कि महावलि महिषासुर का पुत्र उद्धत 'गजासुर' प्रमथ गणों को कुचलते, रौंदते हुए काशी में देवों के मारने के लिये आ रहा था ।

जिस स्थान पर गजासुर पग रखता था उस स्थान की पृथ्वी 'पापी असुर' के बोझ से काँपने लगती ! उस समय असुर के वेग से वृक्ष तथा सूंड़ के टक्कर से पर्वत श्रेणी लुड़कने लगते थे । उसके फूंफकार से मानो समुद्र में तूफान आने लगता था । उसके मस्तक के टक्कर से मेघ आकाश छोड़ देते थे । नदियों में उफान आ जाता था । उस मायावी के शरीर की लम्वाई और चकराई नौ हजार योजन की थी । उसके नेत्रों का पीलापन मानो विजली से वना मालुम होता था । वह जिस दिशा की ओर जाता उधर की भूमि को समतल कर देता था ।

ब्रह्मा जी के वरदान के कारण ही 'काम पराजित व्यक्ति' उस दानव का वध करने में असमर्थ थे । वह स्वच्छन्द हो विचरण करते हुए चारों ओर विनाश कर डालता था । इस प्रकार से समस्त संसार को वह तृण के समान समझता था ।

भगवान् शंकर ने उस राक्षस को अपनी ओर आते देख अपने त्रिशूल से उस पर प्रहार किया । सीने में त्रिशूल धंसा कर आकाश में टांग दिया । उस समय वह भगवान् महादेव के ऊपर छत्र के समान प्रतीत होने लगा ।

इतना होने पर गजासुर भगवान् से कहने लगा कि हे त्रिशूल पाणे ! देवेश ! आपने तो कामदेव का नाश किया है, आपको मैं भली

प्रकार जानता हूँ। हे त्रिपुरान्तक ! आपके हाथों मारे जाने में ही मेरा कल्याण है। हे मृत्युंजय ! इस अन्त समय मैं आपसे कुछ निवेदन
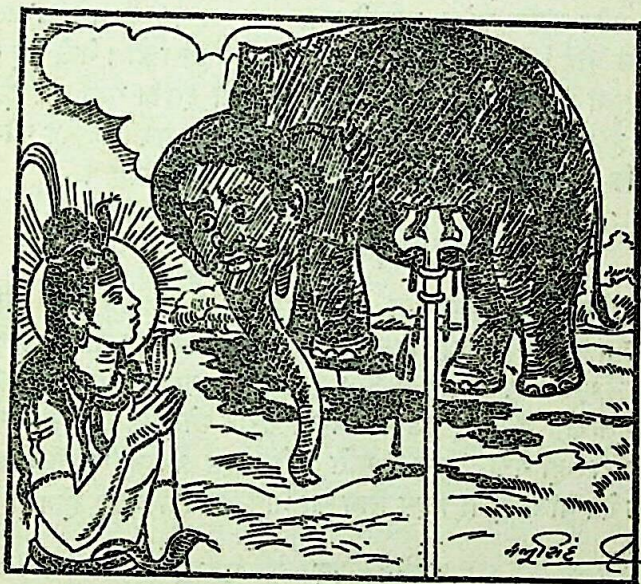
करना चाहता हूँ। हे देव ! आप त्रैलोक्य के वन्दनीय हैं। सभी आपकी छत्र-छाया में रहते हैं। इस समय आज तो आपने त्रिशूल में बेध कर स्वयं को मेरी छत्रछाया में रख लिया है। आपकी इस कृपा से मैं अपने को धन्य मानता हूँ। इस समय तो मेरी ही जीत हुई है। क्योंकि आप मेरी छत्र-छाया में हैं। काल के नियमानुसार एक दिन तो सभी को मरना है पर आपके द्वारा मारा जाना मैं श्रेयस्कर समझता हूँ।

श्री स्कन्द जी ने कहा कि हे घटोद्भव ! परम करुणा की मूर्ति भगवान् शिव ने हँसते हुए उस दानव से कहा कि हे महापुरुषार्थिन ! गजासुर ! तुम्हारी इस सद्बुद्धि से मैं अत्यधिक प्रसन्न हूँ। हे दानव ! तुम वर माँगो।

दैत्येन्द्र गजासुर ने भगवान् के वचन सुनकर वर माँगते हुए कहा कि हे दिगम्बर ! हे विरूपाक्ष ! त्रिशूलाग्नि से सिझे हुए मेरे इस चर्म को आप सदैव धारण करें। आपकी कृपा से उत्तम गंध वाला तथा अत्यन्त कोमल और निर्मल मेरा चर्म आपका परम विभूषण हो। मेरी यह खाल यदि पुण्य से पूर्ण न होती तो आपके शरीर से इसका स्पर्श कैसे होता। अतः हे शंकर ! आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो एक वर और देने की कृपा करे कि आज से आपका नाम 'कृत्तिवासाः' प्रकट हो जाय।

कृत्तिवासेश्वर

गजासुर की प्रार्थना सुन भगवान् शंकर ने तथास्तु कहा और यह भी कहा कि हे पुण्यनिधे ! दैत्य ! तुमने जो वर मांगा सो तो मैंने दिया ही साथ में एक और वरदान मैं तुम्हें दे रहा हूँ। तुम अपनी मुक्ति हेतु इस अविमुक्त क्षेत्र में मुझसे युद्ध कर अपना शरीर छोड़ रहे हो अतः तुम्हारा यह शरीर ही मेरा 'लिंग' (मूर्ति) हो। इस क्षेत्र में यह लिंग सबको मुक्ति देने वाला होगा। इस लिंग का नाम 'कृत्तिवासेश्वर' होगा।

कृत्तिवासेश्वर की महत्ता

यह कृत्तिवासेश्वर लिंग महापापनाशी होगा एवं समस्त लिंगों में प्रधान मस्तक रूप में होगा। जिस भाँति समस्त शरीर में 'शिरो' भाग उत्तम होता है उसी प्रकार यह लिंग काशी के समस्त लिंगों में श्रेष्ठ 'शिरो' रूप में पूजनीय एवं फलदायक होगा। मनुष्यों के हितार्थ परिवार सहित मैं इस लिंग में सदा वास करूंगा। इस लिंग का पूजन, स्तुति, दर्शन आदि करने वाला मनुष्य पुनः गर्भ में वास नहीं करेगा।

निष्परिग्रही, निर्द्वन्द्व, शांत, दांत, क्रोधविहीन, रुद्र, पाशुपत, सिद्ध ऋषि, तत्व-चिंतक, मानापमान में समभाव रखने वाले, ईंट-पत्थर और स्वर्ण को समान समझने वाले जो भक्त इस अविमुक्त क्षेत्र में वास करेंगे उन सब पर अनुग्रह करने हेतु मैं इस कृत्तिवासेश्वर लिंग में सदा

वास करता रहूँगा। प्रतिदिन तीनों समय इस स्थल पर दशकोटि सहस्त्र तीर्थ भगवद्दर्शन के लिये आया करेंगे।

भगवान् ने आगे कहा कि द्वापर और कलियुग में पापबुद्धि वाले, सदाचार से हीन, सत्य और शुचिता से विमुख, माया, दम्भ, लोभ मोह, अहंकार से परिपूर्ण लोग तथा शूद्रों के अन्न से जीविका करने वाले, लालची, स्नान, सन्ध्या, जप, 'यज्ञ आदि से विमुख ब्राह्मण' उत्पन्न होंगे। ऐसे लोग भी इस कृत्तिवासेश्वर के समीप पहुंच कर समस्त पापों से मुक्त हो पुण्यात्माओं के समान सुख पूर्वक 'मोक्षपद' के अधिकारी होंगे। अतः काशी क्षेत्र में लोगों को कृत्तिवासेश्वर का दर्शन पूजन एवं इस कृत्तिवास क्षेत्र का सेवन करना चाहिए। अत्यन्त दुर्लभ जो मोक्ष हजारों जन्म में लोगों को उपलब्ध नहीं होता। कृत्तिवासेश्वर क्षेत्र में 'लिंग' का पूजन कर अनायास ही एक जन्म में वह मिल जाता है।

दान, तपस्या आदि के द्वारा पूर्व जन्म का पाप धीरे-धीरे दीर्घकाल में नष्ट होता है परन्तु कृत्तिवासेश्वर का दर्शन करने से वह तत्काल ही नष्ट हो जाता है। जो मनुष्य कृत्तिवासेश्वर का दर्शन पूजन करेंगे वे सब मेरे शरीर में प्रविष्ट होवेंगे और उनको पुनः जन्म नहीं लेना होगा।

ऐसी स्थिति में अविमुक्त क्षेत्र के निवासियों को शतरुद्रीय का जप एवं बारम्बर कृत्तिवासेश्वर का दर्शन श्रेष्ठकर होगा।

पुनः गर्भवास नहीं

भगवान् ने आगे कहा कि सात करोड़ महारुद्र मन्त्र का जप करने से जो फल प्राप्त होता है वह काशी में कृत्तिवासेश्वर का पूजन मात्र करने से प्राप्त होगा। फाल्गुन वदी १४, माघ मास की शिवरात्रि अर्थात् फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को उपवास कर कृत्तिवासेश्वर का पूजन करने से 'परमोत्तमगति' की प्राप्ति होगी। जो मनुष्य चैत्र की पूर्णिमा को यहाँ कृत्तिवासेश्वर के समीप बड़ा उत्सव करेगा वह कभी गर्भ में वास नहीं करेगा।

इतना कहकर भगवान् महेश्वर ने गजासुर के खाल को अपनें नग्न शरीर पर धारण कर लिया।
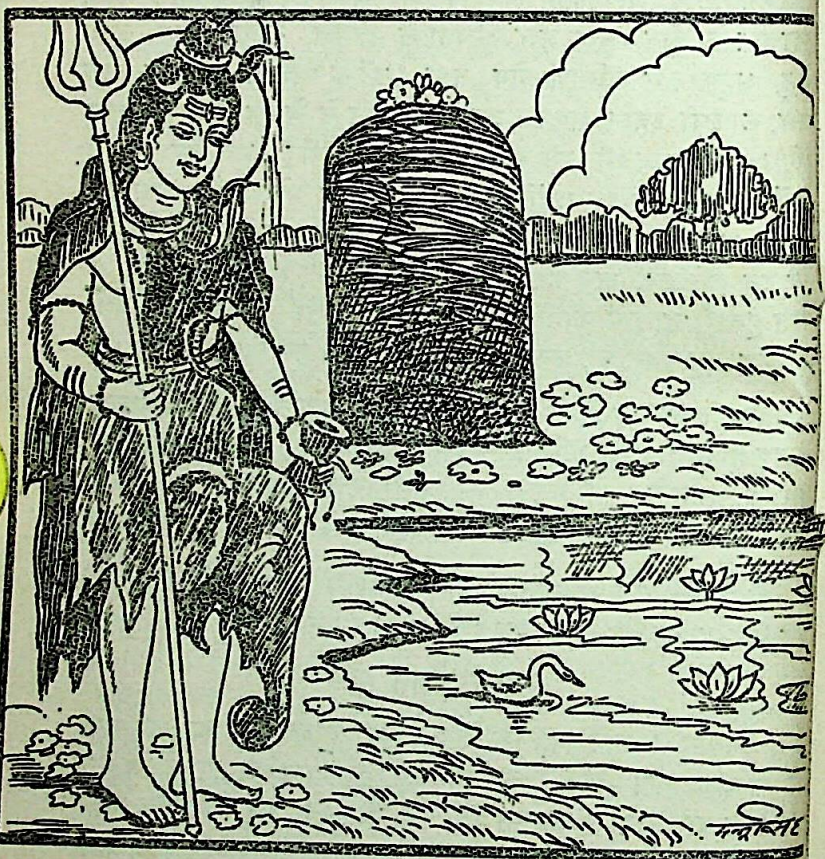
त्रिशूल निकालने पर कुण्ड

श्री कार्त्तिकेय जी ने आगे कहा कि हे कुम्भज ! मुने ! जिस दिन दिगम्बर भगवान् 'कृत्तिवासा' हुए उस दिन बहुत बड़ा महोत्सव वहाँ

पर मनाया गया। जिस स्थल पर दानव से युक्त त्रिशूल को भगवान् ने गाड़ा था उस स्थल से त्रिशूल निकालने के पश्चात् एक बड़ा कुण्ड सा वहां हो गया। जो मनुष्य उस कुण्ड में स्नान कर पितृगणों को तर्पण करते हैं और भगवान् कृत्तिवासेश्वर का दर्शन करते हैं वे कृतकृत्य हो जाते हैं।

उस कुण्ड की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए श्री स्कन्द जी ने कहा कि हे अगस्त्य! उस तीर्थ में अद्भुत जो घटना घटी है उसे भी मैं आपको सुना देता हूं कि उस कुण्ड के प्रभाव से कौए भी हंस हो गये।

कौए हंस हो गये

पूर्वकाल में चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के दिन भगवान् कृत्तिवासेश्वर की यात्रा पर भारी संख्या में लोग निकले थे। मन्दिर से चढ़े अन्न-फल आदि के ढेर हो गये थे उन्हें पुजारियों ने एक ओर लगा रखा था। उस ढेर पर अनेक पक्षि-गण आकाश मार्ग से आने लगे और अपने चोंच में जो भी लगता उसे लेकर पुनः उड़ जाते। यह क्रम चल ही रहा था
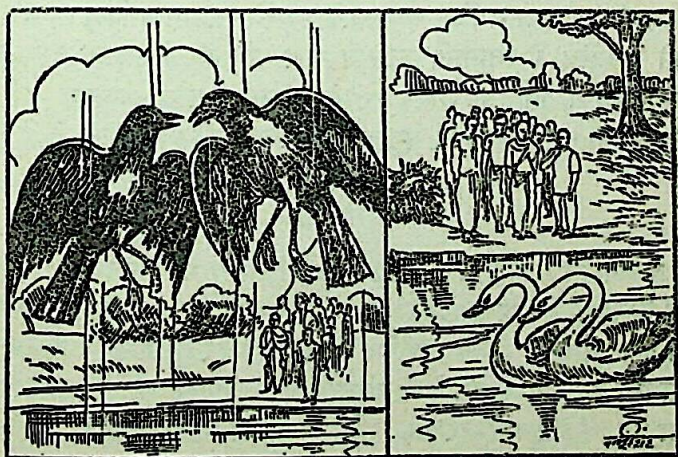
कि कुछ कौवे आपस में छीना-झपटी के चक्कर में उस कुण्ड में गिर पड़े। उनकी आयु शेष रही अतः वे पुनः जीवित निकले परन्तु अबकी बार वे कौवे हंस हो गये थे। यह दृश्य वहाँ उपस्थित जन समुदाय नें देखा और आश्चर्य चकित हो कहने लगा कि 'देखो! वह देखो! कैसा विचित्र गृश्य दिखाई दे रहा है? हम लोगों के देखते-देखते काले कौवे श्वेत 'हंस' हो गये।

हे कुम्भज! क्या कहूं। तभी से वह कुण्ड मृत्युलोक में कृत्तिवासेश्वर के समीप 'हंस तीर्थ' नाम से विख्यात हुआ।

'हंसतीर्थं समारभ्य कृतिवास समीपतः।
नाम्नाख्यातमभूल्लोके तत्कुंडं कलशोद्भव॥

अतीव मलिनात्मानो महामलिन कर्मभिः।
क्षणान्निर्मलतांयांति हंस तीर्थ कृतोदकाः॥

काश्यां सदैववस्तव्यं स्नातव्यं हंसतीर्थ के।
द्रष्टव्यः कृत्तिवासेशः प्राप्तव्यं परमं पदम्॥

अर्थात् अन्यन्त मालिन कर्म करते हुए जिनके मन मालिन हो गये हैं वे भी 'हंसतीर्थ' में स्नानादि करने से क्षण मात्र में निर्मल हो जाने हैं। सदैव काशी में निवास और हंसतीर्थ में स्नान तथा भगवान् कृत्ति-वासेश्वर का दर्शन करने से मनुष्य को परमपद की प्राप्ति होती है!

अनन्त फल

हे अगस्त्य! कहाँ तक कहूँ। वैसे तो काशी में पग-पग पर अनेक लिंग विद्यमान हैं परन्तु उन सबमें शीश (मस्तक) रूप में कृत्तिवासेश्वर लिंग है। भक्ति के साथ एकमेव 'कृत्तिवासेश्वर' लिंग का पूजन एवं आराधना करने से काशी के समस्त लिंगों के पूजन का फल प्राप्त हो जाता है। 'कृत्तिवासेश्वर' के समीप जप, तप, दान, हवन, तर्पण, देवपूजन आदि जो कुछ किया जाता है वह अनन्त हो जाता है।

हे कलोशद्भव ! हंस तीर्थं तो अनादि सिद्ध तीर्थं है परन्तु काशी में भगवान् का सान्निध्य पाकर यह पुनः प्रकट हुआ है। ये सब लिंग युगानुरूप छिप जाते हैं पर पुनः भगवान महेश्वर का सान्निध्य पाकर प्रकट होते हैं। हे मुने ! हंसतीर्थ के चतुर्दिक महामुनियों द्वारा स्थापित १०,२०० लिंग कात्यायनेश्वर से लेकर च्यवनेश्वर तक हैं। ये लिंग काशीवासियों के लिए सिद्धिदायक हैं।

लोमशेश्वर, मालतीश्वर व अंतकेश्वर

'भगवान कृत्तिवासेश्वर के पश्चिम लोमसऋषि द्वारा स्थापित लोमशेश्वर विराजमान हैं। इनका दर्शन करने से यमराज का भय नहीं रहता। उत्तर ओर शुभप्रद 'मालतीश्वर' लिंग विराजमान हैं। इनकी पूजा करने वाला व्यक्ति 'हाँथीनशीन' एवं ऐश्वर्यशाली होता है। ईशान कोण में 'श्री अंतकेश्वर' विराजते हैं इनका दर्शन करने से पापी निष्पाप हो जाते हैं।

जनकेश्वर असितांग भैरव, शुष्कोदरी

वहीं पास में 'जनकेश्वर' हैं इनकी पूजा करने से 'ब्रह्मज्ञान' की प्राप्ति होती है। इनके उत्तर में विशाल मूर्ति श्री आसितांग भैरव की है। इनका दर्शन करने पर यमराज का दर्शन नहीं करना पड़ता। वहीं विकट लोचन वाली शुष्कोदरी देवी हैं। जो सदा काशीवासियों के विघ्नों का भक्षण किया करती है।

बैताल व बैताल-कुण्ड

देवी के नैनतृत्य कोण पर 'अग्निजिह्व नाम का एक बैताल रहता है जो मंगलवार को पूजा करने वाले को वांछित सिद्धि प्रदान करता है। उसी स्थल पर बेताल कुण्ड है जिसमें स्नान करने से घाव, फोड़ा, फुन्सी आदि रोग दूर हो जाते हैं। कुण्ड में स्नान कर बेताल का दर्शन करने वाला मनोवांछित फल प्राप्त करता है। इसी स्थान पर एक गण

है जिसे दो भुजा, चार पैर, पाँच शीश है उसका दर्शन करने से 'पाप' हजारों टुकड़ों में हो नष्ट हो जाते हैं।

विलक्षण वृष-रुद्र

उसी स्थान के उत्तर ओर ४ सींघ, ३ पैर, २ शीश, ७ हाथ वाला बड़ा भीषण वृषाकार रुद्र है। त्रिधाबद्ध हो जो लोग काशी में विघ्न करते हैं और पाप वुद्धि वाले होते हैं उन्हें उन सबको काटकर समाप्त करने के लिए वह 'रुद्र' चिल्लाया करता है। जो लोग काशी में धर्म बुद्धि रखते है उन्हें और उनके वंश के लोगों को वह अमृत-घट से स्नान कराता रहता है। जो लोग उस वृष-रुद्र की विधि पूर्वक पूजा करते हैं उन पर कभी भी कोई विघ्न आक्रमण नहीं कर पाता।

मणिप्रदीप नाग

रुद्र के उत्तर भाग में 'मणिप्रदीप' नामक एक 'नाग' है और उनके समक्ष विष व्याधियों का हरण करने वाला मणिकुण्ड हैं। इस कुण्ड में स्नान कर नाग का दर्शन करने वाला मनुष्य मणि-माणिक्य, हाथी, घोड़ा, रथ, स्त्री-रत्न, पुत्र-रत्नों से परिपूर्ण राज्य का भागी होता है।

कृत्तिवासेश्वर का जो दर्शन न करते वे पृथ्वी पर भार रूप होते हैं। अतः जो लोग कृत्तिवासेश्वर की उत्पत्ति-कथा सुनेंगे वे लिंग के दर्शन से भी अधिक पुण्यशाली होंगे।

इस प्रकार से स्कन्द पुराणान्तर्गत गजासुर-वध, कृत्तिवासेश्वर उत्पत्ति एवं हंस-तीर्थ वर्णन नामक ६८ वें अध्याय का भाषा में अनुवाद किया गया।

—:o:—

अध्याय ६९

६८ आयतनों का काशी-आगमन

श्रीस्कन्द जी ने आगे कहा कि हे तपोराशे ! महर्षि अगस्त्य ! अब मैं काशी के उन लिंगों का वर्णन सुनाता हूँ जिनका दर्शन व पूजन करने से सभी पवित्रात्मा मनुष्य मुक्ति के अधिकारी होते हैं ।

'रुद्रावास' में नन्दी

जिस स्थान पर भगवान् विश्वनाथ ने गजासुर का बध कर उसके खाल को धारण किया था वह स्थान 'रुद्रावास' नाम से विख्यात हुआ । भगवान् महेश्वर वहाँ पर जगदम्बिका के साथ निवास कर रहे थे । एक दिन वहाँ नन्दी हाथ जोड़ भगवान से इस भाँति निवेदन करने लगे कि हे देव देवेश ! विश्वेश्वर ! अब तक काशी में मनमोहक, मणिमाणिक्य से सुशोभित, सुरम्य ६८ शिवालय बन गये हैं । भूलोक, भुवर्लोक और स्वर्गलोक के उत्तम एवं मुक्तिदायक आयतनों को लाकर मैंने यहाँ प्रतिष्ठापित कर दिया है । इनमें से जिन्हे जहाँ पर जो स्थान दिया है वह मैं निवेदन कर रहा हूँ ।

सन्निहत्या व कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र से देव देव ! आपके अंश स्याणु ईश्वर अपनी एक कला छोड़ शेष कला के साथ यहाँ आ गये हैं और लोलार्क के समीप विराज रहे हैं । लोलार्क के पश्चिम और 'संन्निहत्या' नामक शुभदायिनी पोखरी है 'वहीं कुरुक्षेत्र' की भूमि भी है । उस भूमि में किया गया जप, तप, दान, यज्ञ आदि कुरुक्षेत्र में किये गये कर्मों से करोड़ गुना अधिक फलदायी होते हैं । हे प्रभो ! ब्रह्मावर्त कूप सहित 'देव देव' ईश्वर नैमिषारण्य में एक अंश छोड़कर यहाँ ढुंढिराज के उत्तर

में आ विराजे हैं। उन्हीं के आगे ब्रह्मावर्त कूप भी हैं। इस कूप के जल से स्नान कर देवदेव ईश्वर का दर्शन करने से पुनर्जन्म नहीं होता। यहाँ नेमिषारण्य से करोड़ गुना अधिक फल प्राप्त होता है।

महाबलेश्वर, शशिभूषण, महाकालेश्वर व अयोगन्धेश्वर

साम्बादित्य के समीप में 'महाबलेश्वर गोकर्ण से आकर प्रकट हुए हैं। महाबलेश्वर का दर्शन व पूजन करने से महापाप क्यों न हो सभी वायु के वेग से उड़े हुए रुई के ढेर के समान बिखर जाते हैं। कपाल मोचन के आगे और ऋणमोचन से पहले प्रभास क्षेत्र से आये हुए शशिभूषण प्रतिष्ठित हो गये हैं। यहीं पर प्रभास क्षेत्र से करोड़ गुना अधिक फल काशी में उपलब्ध है। उज्जयनी से 'महा-कालेश्वर' स्वयं यहाँ पधारे हैं, उनके दर्शन से काल का भय नहीं रहता। ॐकारेश्वर के पूर्व की ओर कल्मष-नाशक महाकालेश्वर स्थित हैं। पुष्कर से आकर 'अयोगन्धेश्वर' यहाँ पर मत्स्योदरी के उत्तर की ओर पुष्कर तीर्थ सहित विराज रहे हैं। इनका दर्शन-पूजन करने और अयोगन्ध-कुण्ड में स्नान करने से मनुष्य भवसागर में पड़े अपने पितृगणों का उद्धार करता है।

महानादेश्वर, महोत्कटेश्वर व महाव्रतेश्वर

अट्टहास क्षेत्र से 'महानादेश्वर' यहाँ आकर त्रिलोचन के उत्तर की ओर निवास करते हुए भक्तों को मुक्तिलाभ करा रहे हैं। मरुत्कोट से 'महोत्कटेश्वर' आकर यहाँ पर कामेश्वर के उत्तर की ओर विराज रहे हैं। इनका दर्शन-पूजन करने वाले को निर्मल सिद्धि प्रदान करते हैं। महेन्द्रपर्वत से आकर यहाँ पर स्कन्देश्वर के पश्चिम की ओर रहते हुए 'महाव्रतेश्वर' महाव्रतों के फल प्रदान करने में लगे हैं। विश्वस्थान से 'विमलेश्वर' भी यहाँ आकर स्वर्लीनेश्वर से पश्चिम की ओर विराजते हुए भक्तों को विमल सिद्धि प्रदान कर रहे हैं।

'महादेव' का दर्शन करने से शिवलोक की प्राप्ति

सत्ययुग में देवताओं और मुनि समूहों के स्तुति करने पर दुर्भेद्य

भूमि का भेदन कर जो महालिंग काशी में प्रकट हुए हैं वे मनोरथों को पूरा करते हैं। वह महादेव नाम से यहाँ विख्यात हैं। इसी महादेव लिंग ने ही काशी को मुक्ति-क्षेत्र बनाया है। 'महादेव का दर्शन करने वाला चाहे कहीं भी देह को त्यागे उसे 'शिवलोक' की प्राप्ति हो जाती है। अतः काशी में इनका दर्शन प्रतिदिन करना चाहिए। महादेव ने कल्पान्तर में भी आनन्दवन को नहीं छोड़ा। यह उन्हीं का अनुपम चरित्र है। अभिलाषा की पूर्ति करने वाले, वाराणसी के अधिष्ठाता सर्वलिंग रूप श्री महादेव, हिरण्यगर्भ तीर्थ के पश्चिम में स्थित हैं। जिसने काशी में 'महादेव' लिंग का दर्शन कर लिया मानो उसने त्रैलोक्य भर के लिंगों का दर्शन कर लिया। जिसने एक बार भी 'महादेव' का पूजन किया है वह प्रलय पर्यन्त शिवलोक में प्रसन्नता के साथ निवास करता है। श्रावण शुक्ल चतुर्दशी को जो कोई 'महादेव' लिंग पर यज्ञोपवीत चढ़ाता है वह कभी गर्भ में वास नहीं करता।

पितामहेश्वर

श्रीनन्दी ने आगे बताया कि हे प्रभो। फल्गु आदि साढ़े आठ करोड़ तीर्थों सहित गया तीर्थ से 'पितामहेश्वर' यहाँ पर पधारे हैं। काशी में जिस स्थान पर स्वयं धर्म ने दश लाख युग तक श्रीधर्मेश्वर को साक्षी कर तप किया था वहीं पर पितामहेश्वर विराज रहे हैं। इनकी पूजा करने से कुल के २१ लोगों के साथ मनुष्य स्वयं मुक्त हो जाता है।

प्रयाग से करोड़ गुना फल

तीर्थराज प्रयाग से श्री 'शूलटंकेश्वर' तीर्थराज के साथ यहाँ आये हैं। सुन्दर निर्वाण मण्डप के दक्षिण में वे निवास कर रहे हैं। हे देव ! आपने ही पहले युग में वर देते हुए कहा था कि काशी में आकर प्रथमतः पापनाशी 'शूलटंकेश्वर' का दर्शन करना चाहिए। जो कोई प्रयाग तीर्थ में स्नान कर शूलटंकेश्वर का विधिपूर्वक पूजन करेगा उसे प्रयाग तीर्थ में स्नान करने का करोड़ गुना फल प्राप्त होगा।

महातेजेश्वर, महायोगीश्वर, कृत्तिवासेश्वर व चण्डीश्वर

शंकुकर्ण तीर्थ से 'महातेज' नामक लिंग यहाँ आ पधारे हैं। इनका मन्दिर माणिक के कणों से मण्डित हो आकाश को प्रकाशित कर रहा है। इनका दर्शन-पूजन आदि करने से 'परमधाम' की प्राप्ति होती है। परमधाम में पहुँचने और वहाँ जाने के बाद कुछ सोचना नहीं पड़ता। भक्त 'विनायकेश्वर' से पूर्व 'महातेजो' भवन, पर चढ़कर शिवलोक में जाता है। परमपावन रुद्रकोटि तीर्थ से 'महायोगीश्वर' भी आ गये हैं। ये पार्वतीश्वर के समीप में हैं। इनका दर्शन करने से करोड़ लिंग के दर्शन करने का फल होता है। महायोगीश्वर मन्दिर के चारो ओर करोड़ो रुद्रमूर्तियों द्वारा बनाए गये एक करोड़ सुन्दर शिवालय शोभायमान हैं। वेदवादी लोग काशी में उस स्थल को रुद्र-स्थली कहते हैं। इस स्थल पर मरने वाले कीट, पतंग, पशु, पक्षि, मृग, म्लेच्छ, दीक्षित आदि भी रुद्र स्वरूप को प्राप्त होते हैं, और उन्हें कभी इस संसार में पुनः जन्म नहीं लेना पड़ता। हजारों जन्मों का पाप इस रुद्रस्थली में प्रवेश करते ही समाप्त हो जाता है। तिर्यक योनिका हो, चाहे निष्कामी हो या सकामी कोई क्यों न हो रुद्रस्थली में देह त्यागने से पर परम पद को प्राप्त हो जाता है।

एकाम्बर क्षेत्र से स्वयं पधार कर भगवान् कृत्तिवासा 'कृत्ति-वासेश्वर' लिंग में विराज रहे हैं। इस स्थान पर जगदम्बा सहित ऋषियों और गणों को भगवान महादेव वेद विहित ब्रह्म का उपदेश कर रहे हैं। मरुजांगल तीर्थ से भगवान् चण्डीश्वर भी यहाँ आ गये हैं। जिनका दर्शन करने से प्रचण्ड पापों के ढेर नष्ट हो जाते हैं। पाशपाणि गणेश के समीप चण्डीश्वर का दर्शन करने वाला मनुष्य परमगति को प्राप्त होता है।

नीलकण्ठेश्वर, विजयेश्वर, उर्ध्वरेता, श्रीकण्ठेश्वर, कपर्दीश्वर व सूक्ष्मेश्वर

दन्तकूट गणेश के समीप कालंजर पर्वत से पधारे हुए भगवान् नीलकण्ठ विराज रहे हैं। जो लोग काशीधाम में नीलकण्ठेश्वर का पूजन करते हैं वह स्वयं नीलकण्ठ एवं चन्द्रभूषण हो जाते हैं। काश्मीर से श्री विजयेश्वर भी यहाँ आ गये हैं। शालकंटक गणेश के पूर्व में यह वास कर रहे हैं। यह अपने भक्तों को सदा विजय प्रदान कराते हैं। इनका पूजन करने से युद्ध, राजद्वार, द्यूत और विवाद में सर्वत्र लोग विजयी होते हैं। त्रिदण्डा तीर्थ से भगवान् उर्ध्वरेता स्वयंप धार कर कूषमाण्ड गणेश के सम्मुख विराज रहे हैं। इनका दर्शन करने से उर्ध्व गति मिलती है। इनके भक्तों की कभी अधोगति नहीं होती। मण्डलेश्वर क्षेत्र से श्रीकण्ठेश्वर भी यहाँ पधार कर मण्डविनायक के उत्तर ओर अवस्थित हो गये हैं। श्रीकण्ठ के भक्त श्रीकण्ठ होते हैं और इस लोक और परलोक में कहीं भी श्रीविहीन नहीं होते। छाग-लांड तीर्थ से 'कपर्दीश्वर' यहाँ आकर पिशाचमोचन तीर्थ पर स्वयं प्रकट हुए हैं। इनका पूजन करने से मनुष्य कभी नरक में नहीं पड़ता और न तो घोर पिशाच ही होता है। अम्रातकेश्वर क्षेत्र से पधार कर विकटदन्त गणेश के पास 'श्री सूक्ष्मेश्वर' प्रकट होकर अपने भक्तों को सूक्ष्मगति प्रदान कर रहे हैं।

जयन्तेश्वर, त्रिपुरान्तक व कुक्कुटेश्वर

श्री नन्दी ने आगे कहा कि हे प्रभो! मधुकेश्वर तीर्थ से आकर लम्बोदर गणेश के सामने 'जयन्तेश्वर' विराज रहें हैं। जो मनुष्य भागीरथी श्री गंगाजी में स्नान कर जयन्तेश्वर लिंग का पूजन-दर्शन करता है वह वांछित सिद्धि को प्राप्त करता है और सर्वत्र विजयी होता है। श्री शैल क्षेत्र से स्वयं भगवान् 'त्रिपुरान्तक' भी यहाँ आकर आपके (विश्वेश्वर) के पश्चिम में विराजते हुए भक्तों को

अभिष्ट फल दे रहे हैं और श्री शैल के दर्शन का फल प्रदान कर रहे हैं। भगवान् त्रिपुरान्तक का पूजन करने वाला कभी गर्भ में वास नहीं करता। सोम्य क्षेत्र से श्री 'कुक्कुटेश्वर' आकर वक्रतुण्ड विनायक के पास विराज रहे हैं। इनका दर्शन व पूजन करने से भी सिद्धियाँ हस्तगत हो जाती है।

त्रिशूलीश्वर, जटीदेव, त्र्यम्बकेश्वर, हरेश्वर, शर्वेश्वर, महालिंग, सहस्राक्षेश्वर, हर्षितेश्वर

जालेश्वर तीर्थ से 'त्रिशूलीश्वर' ने आकर कूटदन्त विनायक के समक्ष अपना स्थान बना लिया है। रामेश्वर क्षेत्र से श्री 'जटीदेव' ने यहाँ आकर श्री एकदन्त विनायक के उत्तर ओर अपना डेरा डाला है। श्री जटीदेव अपने भक्तों की प्रत्येक कामनाओं को पूर्ण कर रहे हैं। त्रिसन्ध्य तीर्थ से भगवान् श्री 'त्र्यम्बकेश्वर' आकर त्रिमुख गणेश के पूर्व ओर अवस्थित हो गये हैं। हरिश्चन्द्र क्षेत्र से आकर श्री 'हरेश्वर' यहाँ आकर हरिश्चन्द्रेश्वर के आगे अवस्थित हो गये हैं। जो अपने भक्तों को सदैव विजयी बनाते हैं। चतुर्वेदेश्वर के आगे मध्यमकेश्वर क्षेत्र से भगवान श्री 'शर्वेश्वर' आकर विराज रहे हैं। शर्वलिंग का पूजन करने वाले कभी जन्तुयोनि में नहीं जाते। यज्ञेश्वर के समीप में स्थानेश्वर क्षेत्र से आकर 'महालिंग' प्रकट हुआ है। महालिंग का पूजन करने से इह लोक और पर लोक में 'श्री' की प्राप्ति होती है। सुवर्ण तीर्थ से आकर भगवान् 'सहस्राक्षेश्वर' भी पधारे हैं इनका दर्शन करने से ज्ञान-चक्षु प्राप्त हो जाता है। श्री शैलेश्वर के दक्षिण ओर स्थित सहस्राक्षेश्वर का दर्शन करने से सैकड़ों जन्म का पाप नाश हो जाता है। हर्षित क्षेत्र से और 'हर्षितेश्वर' तमोनाशक यहाँ प्रकट हुए हैं। इनका दर्शन व पूजन करने से बड़े हर्ष की प्राप्ति होती है। मन्त्रेश्वर के समीप स्थित इस श्री हर्षितेश्वर का पूजन-दर्शन करने से सदा हर्ष ही बना रहता है।

रुद्रेश्वर, वृषेश्वर और ईशानेश्वर

श्री स्कन्द जी ने आगे का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान् विश्वनाथ से नन्दी ने आगे बताया कि रुद्रमहालय से 'श्री रुद्रेश्वर' भी यहाँ पर आकर त्रिपुरेश्वर के समीप विराजते हुए भक्तों का रुद्र-लोक वास का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। जो लोग रुद्रेश्वर के पूजन करते हैं वे मनुष्य होते हुए भी रुद्ररूप में दृष्टिगोचर होते हैं। इतना ही नहीं जीवित अवस्था में या मरने पर भी वे रुद्ररूप में ही रहते हैं। वाणेश्वर के समीप में श्री 'वृषेश्वर' भी वृषभध्वज तीर्थ से आकर यहाँ निवास कर रहे हैं। केदार तीर्थ से आकर श्री 'ईशानेश्वर यहाँ प्रह्लाद केशव के पश्चिम भाग में अवस्थित हैं। गंगा जी में स्नान कर श्री ईशानेश्वर का जो कोई दर्शन करता है वह मरने के बाद ईशान लोक में वास करता है।

संहार भैरव व उग्रेश्वर

भैरव क्षेत्र से श्री 'भैरव' भी यहाँ आए हैं। काशी में वह श्री संहार भैरव के नाम से विख्यात है। इनका दर्शन प्रयास करके करना चाहिये। ये अपने भक्तों के सभी पापों का नाश करते हैं। खर्व विनायक से पश्चिम में ये अवस्थित हैं। कनखल तीर्थ से पधार कर श्री अर्क विनायक के पूर्व में श्री 'उग्रेश्वर' स्थित होकर भक्तों के उग्र पापों का नाश करते हैं।

भवेश्वर व दण्डीश्वर

श्री नन्दी ने आगे बताया कि हे प्रभो! वस्त्रापथ क्षेत्र से आकर भगवान् श्री 'भवेश्वर' भीम चण्डी के समीप प्रकट हुए हैं। जो मनुष्य भगवान् भवेश्वर का दर्शन-पूजन करते हैं वे कभी भी भवसागर में नहीं पड़ते और आज्ञाकारी सभी राजाओं का वह प्रभु हो जाता है। देवदारू वन से आकर पातकों का नाश करने वाले श्री दण्डीश्वर' देहली विनायक से पहले विराजते हुए मनुष्यों को पुनर्जन्म से मुक्त करते हैं।

श्री शंकर, कलशेश्वर व काललिंग

'भद्रकर्णह्रद क्षेत्र से आए हुए भगवान् शिवजी तीर्थों के साथ य
पधारे हैं। उदण्ड गणेश के पूर्व भक्तों का कल्याण करने में वह ल
हैं। हरिश्चन्द्रेश्वर के आगे श्री शंकर का पूजन करने से मनुष्य पु
माता के गर्भ में वास नहीं करता। चन्द्रेश्वर के पश्चिम ओर 'ममेश्व
तीर्थ से आकर 'कलशेश्वर' विराज रहे हैं। इनका दर्शन व पूज
करने से काल व कलिका भय नहीं रहता। मित्र वरुण के दक्षि
यमतीर्थ में स्नान कर मंगलवार को चतुर्दशी तिथि में काललि
का पूजन-दर्शन करने से मनुष्य को यमलोक की यात्रा नहीं कर
पड़ती।

पशुपतेश्वर, कपालीश्वर, उमापतिश्वर व दीप्तेश्वर

नेपाल क्षेत्र से आकर पशुपतिनाथ यहाँ पधार कर भक्तों को यो
का उपदेश देते हुए पशु-पाश से निवृत्त करते हैं। करवीरक तीर्थ
आकर कपालीश्वर, कपालमोचन तीर्थ पर विराज रहे हैं। इनका दर्श
करने से मनुष्य ब्रह्महत्यादि पापों से मुक्त हो जाता है। देविका ती
से आकर उमापति भी यहाँ विराजे हैं। इनका दर्शन करने से बहु
काल का संचित पाप नष्ट हो जाता है। उमापति के समीप ही महेश्व
क्षेत्र से आकर श्रीदीप्तेश्वर विराजते हुए दोनों लोक के अन्धकार
समाप्त कर भक्तों के लिए प्रकाश प्रदान करते हुए मोक्ष-गति
रहे हैं।

नकुलीश्वर, अमरेश्वर, भीमेश्वर

कायारोहण तीर्थ से आकर आचार्य नकुलीश्वर लिंग रूप में य
महादेव के दक्षिण ओर अपने महापाशुपत व्रतधारी शिष्यों के सा
विराज रहे हैं। इनका दर्शन कर मनुष्य ज्ञान की प्राप्ति कर संसा
के अज्ञान से विरत होते हैं। गंगासागर तीर्थ से भगवान् अमरेश्व
आकर काशी में भक्तों को अमरत्व प्रदान करते हैं। सप्तगोदावरी ती

से आकर भीमेश्वर लोगों को भोग व मोक्ष प्रदान कर रहे हैं। नकुलेश्वर के पूर्व ओर स्थित होकर भीमेश्वर लोगों के भयंकर पापों का नाश कर रहे हैं।

भस्मगात्रेश्वर, ईश्वर, धरणीवाराह

भूतेश्वर क्षेत्र से 'भस्मगात्रेश्वर' पधार कर भीमेश्वर के दक्षिण ओर विराज रहे हैं। इनका दर्शन-पूजन करने से सैकड़ों वर्ष तक पाशुपत व्रत करने का पुण्य-फल प्राप्त होता है। नकुलेश्वर तीर्थ से पधार कर 'स्वयंभू ईश्वर' यहाँ पर महालक्ष्मीश्वर के समीप में विराज रहे हैं। वहीं पर सिद्धिह्रद में स्नान कर स्वयंभूलिंग का पूजन करने से पुनर्जन्म नहीं लेना पड़ता। यहाँ पर प्रयाग तीर्थ के समीप में धरणीवाराह विराज रहे हैं। आपका यहाँ आना सुनकर विन्ध्याचल से अनेक गण, ऋषि, देव मण्डल तथा रत्नकन्दर भी आये हैं। धरणीवाराह का दर्शन करने वाला आपत्ति के समुद्र में कभी नहीं पड़ता और जो पड़ा रहता है उसका भी उद्धार हो जाता है।

गणाध्यक्ष गणेश व विरूपाक्ष

कर्णिका तीर्थ से आकर करनाफूल के समान कान्तिमान हजारों उपसर्गों के नाशक एवं हाथ में गदा धारण किए हुए 'गणाध्यक्ष गणेश धरणीवाराह के पश्चिम में विराज रहे हैं। इनका पूजन करने से मनुष्य गणपति पद को प्राप्त करता है। हेमकूट से पधार कर विरूपाक्ष श्री महेश्वर के दक्षिण में पधारते हुए मनुष्यों को संसार जाल से उद्धार कर रहे हैं।

हिमस्थेश्वर

गंगाद्वारपुरी (हरद्वार) से हिम की भाँति प्रभा वाले हिमस्थेश्वर यहाँ आकर ब्रह्मनाल के पश्चिम ओर निवास करते हुए भक्तों को सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्रदान कर रहे हैं।

श्री नन्दी ने आगे कहाकि हे प्रभो ! कैलाश पर्वत से ७ करोड़ संख्या में बलवान गण और स्वयं गणाधिप इस समय काशी में विराज रहे हैं। इन गणों ने सप्तस्वर्ग की भाँति बड़े-बड़े द्वार और उनमें अगरी और सिकड़ी से युक्त किवाड़ों से युक्त विशाल कोट बनाये हैं। ये कोट इतने विशाल हैं कि इनमें करोड़ों वीर भ्रमण कर रहे हैं। इन कोटों में सभी प्रकार की सिद्धियाँ भरी पड़ी हैं। ये कोट सोना, चाँदी, तम्बा, कांसा, पीतल, सीसा आदि रमणीय एवं गगन स्पर्शी वने हैं। काशी के चारो ओर पर्वत के समान बड़ी कोट बन गयी हैं।

दो रूप में मत्स्योदरी

मत्स्योदरी का जल कोट की खाँई में

मत्स्योदरी से जल कोट की खाइयों में नीचे ही नीचे ले जाया गया है। इसी कारण मत्स्योदरी (मछोदरी) भीतरी और बाहरी दो प्रकार को हो गयी हैं। वह गंगा में मिल जाने से बहुत बड़ी तीर्थ बन गयी है। वर्षा ऋतु में जब गंगा का जल बढ़ता है तब यहाँ पर उलटी धारा चलने लगती है। वड़े पुण्य से यह तीर्थ लोगों को प्राप्त होता है। जिस समय गंगा और मत्स्योदरी का संगम हुआ हो और सूर्य या चन्द्रग्रहण लगा हो उस समय सैकड़ों करोड़ गुना फल इस तीर्थ में स्नान करने से होता है।

सभी पर्व, तीर्थ, लिंग मत्स्योदरी तीर्थ पर

जब गंगा जल मत्स्योदरी तीर्थ में चला जाता है उस समय समस्त तीर्थ, पर्व और लिंग वहीं तीर्थ पर आकर विराजते हैं। मत्स्योदरी तीर्थ में स्नान, तर्पण, श्राद्धादि करने वाला मनुष्य पुनः माता के उदर में नहीं पड़ता।

मत्स्याकार तीर्थ

श्री नन्दी ने आगे कहा कि हे नाथ। जब गंगा का संगम मत्स्योदरी

से हो जाता है उम समम यह तीर्थ मत्स्यकार दृष्टिगोचर होता है। ऐसे समय इस तीर्थ में स्नान करने वाले लोग उत्तम समझे जाते हैं। अनेक पाप करने पर भी वे यहाँ के उस समय के स्नान करने के कारण मृत होने के वाद यमपुरी की यात्रा नहीं करते।

श्री स्कन्द जी ने आगे वताया कि हे अगस्त्य ! मत्स्योदरी तीर्थं का वर्णन कहाँ तक कहूँ। श्रीनन्दी ने भगवान विश्वनाथ से कहा कि हे नाथ ! बहुत से तीर्थों में स्नान और कठोर तप करने की अपेक्षा प्रयास कर मत्स्योदरी तीर्थ में एक बार स्नान करने से गर्भवास का भय नहीं रहता। जहाँ पर यनुष्यों, ऋषियों और देवताओं द्वारा प्रतिष्ठित लिंग हैं, ऐसे मत्स्योदरी तीर्थ में जाकर स्नान करने से मनुष्य मोक्ष का पात्र बन जाता है।

वैसे तो स्वर्ग-लोक, पाताल-लोक और मृत्यु-लोक में अनेक तीर्थ हैं परन्तु मत्स्योदरी तीर्थ के आगे करोड़हवें अंश के समान भी नहीं हैं। हे विभो ! उदार कर्मी गणों ने मत्स्योदरी तीर्थ को वहुत बड़ा बना दिया है।

भूर्भुवः लिंग और हाटकेश्वर

श्री नन्दी ने आगे कहाकि हे नाथ ! गणाधिपति के पूर्व ओर भूर्भुवः लिंग, गंधमाधव शैल मे यहाँ आकर वाम कर रहे हैं। पुण्यशाली लोग भूर्भुवः लिंग का दर्शन कर भूलोक, भुवर्लोक और स्वर्गलोक से भी परे जाकर उत्तम भोगों को भोगते हैं। हे प्रभो ! सातवें पाताल तल से निकल कर भोगवती (पाताल गंगा) सहित हाटकेश्वर महालिंग भी यहाँ आ गये हैं। इनका विशाल मन्दिर वासुकी आदि नागों ने मणिमाणिक्य से बड़ा प्रयास करके निर्मित किया है। हाटकेश्वर का प्रयास कर दर्शन-पूजन करने वाला समस्त समृद्धियों से पूर्ण हो अगणित भोगों को भोगते हुए अन्त में निर्वाण पद को प्राप्त हो जाता है।

तारकेश्वर और किरातेश्वर

ताराल़ोक (आकाश) से ज्योतिरूप तारकेश्वर भी ज्ञानवापी के सामने विराज रहे हैं। जो बुद्धिमान लोग ज्ञानवापी में स्नान कर सन्ध्या-वन्दनादि नित्य कर्म, पितरों को तर्पण आदि करके मौन-व्रती हो तारकेश्वर का दर्शन करते हैं वह लोग समस्त पापों से छूट जाते हैं। 'अनन्य पुण्य अर्जित करते हैं तथा अन्त समय में और तारक-ज्ञान' प्राप्त कर विमुक्त हो जाते हैं।

हे प्रभो! पूर्व काल में आपने जहाँ पर 'किरात' रूप धारण किया था उसी किरात तीर्थ से श्री किरातेश्वर पधार कर भगवान् भारभूतेश्वर के पीछे विराज रहे हैं। इनका दर्शन करने से मनुष्य माता के गर्भ में पुनः शयन नहीं करता।

नैॠत्येश्वर, मरुकेश्वर और जलप्रिय लिंग।

यहाँ पर नैॠत्य दिशा में विभीषण द्वारा स्थापित पौलस्त्यराघव के पीछे नैॠत्येश्वर लिंग के दर्शन से दुष्टों का संहार हो जाता है और लंका से आये हुये मरुकेश्वर लिंग का दर्शन करने से राक्षसों का भय नहीं रह जाता। जललिंग स्थान से आकर जलप्रिय लिंग' भी गंगा के जल में विराज रहा है। इनका शिवालय अत्यन्त विचित्र एवं सब धातुओं का बना हुआ गंगा के बीच में दिखाई देता है। बड़े पुण्यशाली को इनका दर्शन होता है।

कोटेश्वर, अनलेश्वर, त्रिलोचनेश्वर और ओंकारेश्वर

कोटेश्वर तीर्थ से श्री कोटेश्वर भी आकर यहाँ ज्येष्ठेश्वर के पीछे निवास कर रहे हैं। इनका दर्शन व पूजन करने से करोड़ों लिंगों के दर्शन का फल प्राप्त हो जाता है।

बड़वानल से उत्पन्न 'अनलेश्वर' यहाँ पर नलेश्वर के आगे विराजते हुए भक्तों को सिद्धियाँ प्रदान कर रहे हैं। विरजातीर्थ

से आकर भगवान त्रिलोचन त्रिविष्टप लिंग में विराज रहे हैं। ज्ञान प्रदायिनी पिलपिला तीर्थ पर अमरकंटक से पधार कर भगवान ओंकारेश्वर स्वयमेव प्रकट हुए हैं।

सर्व प्रथम त्रैलोक्य के उद्धारार्थ 'काशी' ही प्रकट हुई थी अत: इसे तारक-क्षेत्र कहा गया है। 'गंगा' तो बाद में आयी हैं। काशी के प्राकट्य के बाद ही ओंकारस्वरूप महालिंग स्वयं प्रकट हुआ है।

श्री नन्दी ने कहाकि हे नाथ! ये सभी देव अपने-अपने स्थानों पर अपना एक अंश छोड़ कर शेष अंशों के साथ सभी पवित्र आयतन इस काशी क्षेत्र में पधार गये हैं। हे नाथ! इन सबके गगन स्पर्शी शिवालय दृष्टिगोचर हो रहे हैं। हे प्रभो! ये सब मन्दिर बड़े विचित्र रत्नों एव धातुओं के बने हैं। इनके कलश के दर्शन करने से भी वही मिल जाता है। हे नाथ! इन लिंगों का नाम भी सुन लेने से हजारों जन्मों के संचित पाप नष्ट हो जाते हैं।

श्री नन्दी ने आगे पूछते हुए प्रार्थना किया कि हे स्वामी! मुझे आज्ञा प्रदान करें कि अब मैं और क्या कार्य करूं।

नन्दी के ऐसे वचन सुन कर भगवान विश्वनाथ ने कहा कि हे आनन्द विधायक नन्दी! तुमने बहुत ही अच्छा कार्य किया है। अब मेरी आज्ञा से जाकर ९ करोड़ चण्डिकाओं को जो जहाँ भूत, बेताल, भैरव और अपने-अपने देवताओं के साथ वास कर रही हैं उनको वाहनों, उनकी सेनाओं, अस्त्र-शस्त्रों सहित काशी पुरी की रक्षा हेतु ले आओ और उन्हें प्रत्येक दुर्ग में दुर्गा रूप से चारो ओर टिका दो।

श्री स्कन्द जी ने आगे कहा कि हे अगस्त्य! नन्दी को इतना आदेश देकर भगवान 'हर' भगवती पार्वती के साथ मुक्तिबीज अंकुर समान 'त्रिविष्टप' क्षेत्र में चले गये और शिलाद के पुत्र नन्दी

भी भगवान की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए दुर्गाओं को बुला
कर उन्हें प्रत्येक दुर्गों में ठहरा दिया।

हे अगस्त्य ! जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक पुण्यदायी उक्त आयतनों
की कथा श्रवण करेगा वह स्वर्ग और मोक्ष का अधिकारी हो जाता
है। ईन ६८ लिंगों के विवरण से पूर्ण कथा को सुनने पर कोई भी
प्राणी माता के उदर रूपी कन्दरा में पुनः वास नहीं करता।

इस प्रकार से स्कन्द पुराणान्तर्गत काशी खण्ड में वर्णित ६८
आयतनों के प्रसंग नामक ६९ वें अध्याय का भाषा में अनुवाद
किया गया।

———

अध्याय ७०

काशी में देवी और उनकी महिमा का वर्णन

श्री अगस्त्य ऋषि ने अपनी जिज्ञासा व्यक्त करते हुए पूछा कि हे पार्वती नन्दन ! स्कन्द ! कृपा पूर्वक अब हमें विस्तार से वह आख्यान बताएं कि श्री नन्दी ने किस भांति कहां से किस देवी को लिवा आकर कहां स्थान दिया और वह देवी काशी क्षेत्र के विघ्नों को किस भांति नाश करते हुए क्षेत्र की रक्षा कर रही हैं।

विशालाक्षी

इतना सुन शंकर सुवन ! भवानी के नन्दन ! श्री कार्त्तिकेय जी ने कहा कि वाराणसी पुरी में क्षेत्र की इष्टदात्री भगवती विशालाक्षी अपने पीछे विशाल तीर्थ बनाकर जो अब गंगा में विलीन हो गया है निवास कर रही हैं। विशाल तीर्थ में स्नान कर भगवती विशालाक्षी का दर्शन करने वाले का दोनों लोक में मंगल होता है और उसे अत्यधिक धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है जो लोग भाद्र कृष्ण ३ को व्रत कर भगवती के समक्ष रात्रि जागरण करते हैं और प्रातः चतुर्थी को १४ कुमारियों की पूजा कर उन्हें भोजन कराते हैं तथा उसके बाद स्वयं परिवार सहित पारण करते हैं वे ही लोग पूर्ण रूप से 'काशीवास' का फल प्राप्त करते हैं।

काशी-वासियों को चाहिए कि उपद्रवों की शान्ति हेतु और मोक्ष लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु उक्त तिथि (कजरी के दिन) विशालाक्षी देवी की महायात्रा करें। चाहे काशी-वासी हो या कहीं बाहर का भी क्यों

न हो उस दिन प्रयास कर धूप, दीप, उत्तम पुष्प-माला, उपहार, मणि-मुक्ता आदि अलंकार, चँदवा, सुगंधि-युक्त नवीन वस्त्र, नैवेद्य आदि से भगवती विशालाक्षी का पूजन करना चाहिए। जो उत्तम पुरुष मोक्ष-लक्ष्मी के प्राप्ति हेतु विशालाक्षी देवी का पूजन-अर्चन करते हुए जो कुछ वहाँ चढ़ाते हैं वह दोनों लोक में अनन्त हो जाते हैं। देवी के यहाँ जो कुछ जप, तप, दानादि किया जाता है वह सब मोक्ष का कारण बनता है।

स्त्रियों को विशालाक्षी के पूजन का फल

भगवती विशालाक्षी का पूजन करने से कुमारियों को गुण-शील आदि से युक्त सम्पत्तिमान पति प्राप्त होता है। सौभाग्यवती को गुणवान पुत्र-रत्न की प्राप्ति होती हैं तथा वंध्या स्त्री भी गर्भवती होती हैं। असौभाग्यवती स्त्रियाँ बड़ी सौभाग्यशालिनी होती हैं। विधवा स्त्री पुनः किसी जन्म में विधवा नहीं होती।

श्री स्कन्द जी ने आगे कहा कि हे अगस्त्य ! कहाँ तक कहूँ ! चाहे पुरुष हो या स्त्री काशी में विशालाक्षी देवी की महिमा सुनने, पूजन, दर्शन आदि करने से समस्त अभिलाषाएँ सिद्ध हो जाती हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

ललिता देवी

विशालाक्षी के निकट ही गंगा केशव के समीप भगवती ललिता देवी हैं। वहीं पर ललिता-तीर्थ भी है जो अब गंगा में विलीन हो गया है। प्रयास कर इनकी पूजा करनी चाहिए। ऐसा करने से भक्तों पर कभी कोई विघ्न नहीं पड़ता। आश्विन मास की कृष्ण द्वितीया को ललिता देवी का पूजन करने से स्त्री हो या पुरुष सबको वांछित फल की प्राप्ति होती है। ललिता तीर्थ में स्नान कर ललिता देवी का दर्शन करने से सर्वदा लालित्य का ही लाभ होता है।

विश्वभुजा गौरी

श्री स्कन्द जी नें भगवती विश्वभुजा देवी का वर्णन बताते हुए कहा कि हे मुनि ! विशालाक्षी के सामने ही विश्वभुजा गौरी हैं। यह काशी क्षेत्र के भक्तों के बड़े से बड़े विघ्नों का नाश करती हैं। आश्विन के नौरात्र भर इनका दर्शन करना चाहिए क्योंकि यह देवी सब कामानाओं को पूर्ण करती है। जो मनुष्य काशी में विश्वभुजा देवी का दर्शन नहीं करता भला उसके विघ्न कैसे शान्त होंगे। जो पुण्यात्मा देवी का पूजन-दर्शन आदि करते हैं उन्हें विघ्नों का भय नहीं रहता।

वाराही देवी और शिव दूती देवी

काशी में यज्ञवाराह के निकट वाराही देवी जी हैं इन्हें। प्रणाम करनें से मनुष्य कभी विपत्ति में नहीं पड़ता। उसी स्थान पर आपत्तियों की नाशिनी देवी 'शिवदूती देवी' विराजती हैं। यह देवी आनन्दवन में क्षेत्र रक्षार्थ सदा त्रिशूल लिए शत्रु वर्ग को भगाए रहती हैं।

ऐन्द्री, कौमारी, माहेश्वरी व हस्तानारसिंही

इन्द्रेश्वर के समीप हाथी पर सवार भगवती ऐन्द्री देवी का दर्शन पूजन करने वाला सदा सम्पत्ति को प्राप्त करता है। स्कन्देश्वर के समीप ही मयूरवाहिनी कौमारी देवी हैं यह बड़े फलों को प्रदान करती हैं। महेश्वर के दक्षिण में वृषयान पर विराजती हुई भगवती माहेश्वरी अपने भक्तों को परमधर्म से परिपूर्ण किये रहती हैं। मोक्षार्थी लोगों को निर्वाण नरसिंह के समीप चक्र उठाये हुए भगवती 'हस्तानारसिंही देवी का पूजन-दर्शन करना चाहिए।

ब्रह्माणी देवी

ब्रहमेश्वर के पश्चिम ओर हंस-यान पर आसीन ब्राह्मी देवी विराज रही हैं जो कि कमण्डल से गिर रहे जल को चिल्लू में लेकर उसी से शत्रु वर्ग का नाश करती हैं। ब्रहम-विद्या के लाभार्थी काशी

पुरी में ब्राह्मण, सन्यासी और आत्म-तत्वावबोधी जन प्रतिदिन प्रयास करके भगवती ब्राह्मी देवी का दर्शन किया करते हैं।

नारायणी देवी, विरुपाक्षी गौरी, शैलेश्वरी (शैलपुत्री देवी)

काशी में शारंगधनुष पर तीखे बाणों को चढ़ाए हुए नारायणी देवी विघ्नों को इधर-उधर काटती-फेंकती रहती है। गोपीगोविन्द से पश्चिम ओर तर्जनी अंगुली को उठाये उसमें चक्र घुमाते हुए देवी नारायणी को जो कोई प्रणाम करता है उसकी बड़ी उन्नति होती है। देवयानी के उत्तर और विरूपाक्षी गौरी की भक्ति के साथ पूजन अर्चन करने से मनुष्य वांछित सम्पत्ति को प्राप्त करता है। शैलेश्वर के समीप स्थित भगवती शैलेश्वरी अपनी तर्जनी अंगुली को उठाये हुए भक्त जनों के उत्पात आदि संसर्ग-जनित दोषों को नष्ट करती रहती हैं।

चित्रघण्टा

चित्रकूप के जल से स्नान कर चित्रघंटेश्वर का दर्शन व चित्रघंटा देवी का दर्शन करता है उसे विभिन्न फल की प्राप्ति होती है। घोर पापी क्यों न हो यदि वह भगवती चित्रघंटा देवी का दर्शन कर लेता है तो उसका पाप लेखा चित्रगुप्त नहीं लिखते। देवी का दर्शन न करने वाले नर या नारी को काशी में पग-पग पर विघ्न सताते रहते हैं। चैत्र मास की शुक्लातृतिया को चित्रघंटा का पूजन करना चाहिए। उस दिन धूम-धाम से महोत्सव करे, रात्रि में जागरण करे तथा विधिवत महापूजा करने वाला व्यक्ति यमराज के वाहन, भैंसे के गले में लटके घंटे की ध्वनि नहीं सुनता।

चित्रग्रीवा देवी, भद्रकाली, सिद्धि देवी व विधि देवी

चित्रांगदेश्वर के पूर्व ओर चित्रग्रीवा देवी की पूजा करने वाला मनुष्य कभी भी यम यातना को नहीं भोगता। जो मनुष्य भद्रवापी में स्नान कर भद्रनाग के सम्मुख भगवती भद्रकाली का दर्शन करता है

उसे कभी अभद्र का सामना नहीं करना पड़ता। सिद्धि विनायक के पूर्व ओर स्थित हर सिद्धिदेवी का पूजन करने वाले को महासिद्धि को प्राप्ति होती है। वीधीश्वर के समीप निवास करने वाली विधि देवी का पूजन करने से विविध भाँति की सिद्धि प्राप्त होती है।

बंदी देवी

प्रयागघाट पर स्नान कर निगड़भंजिनी भगवती बंदी देवी का दर्शन-पूजन करने वाला मनुष्य कभी बेड़ियों से नहीं बाँधा जाता। बंदी व्यक्ति की मुक्ति हेतु प्रति मंगल वार को भक्ति भाव के साथ भगवती बंदी देवी का दर्शन पूजन करना चाहिए।

ऐसा करने से देवी संसार के बंधनों को काट डालती है। काशी में जो लोग बंदी देवी के सेवक हैं उनका भाई बन्ध यदि बंदी बनाया गया है तो वह भी बंधन से छूट जाता है। यदि नियम पूर्वक देवी का पूजन किया जाय तो निस्सन्देह मनुष्य बन्धन-मुक्त हो जाता है और उसके सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं।

देवी के एक हाथ में घन (मुद्गर) और दूसरे में टांकी लिए वह अपने भक्तों के बन्धन को काटने में सदा तत्पर रहती हैं। तीर्थराज के समीप निवासिनी भगवती 'बंदी देवी' सभी कामनाओं को पूर्ण करती है।

अमृतेश्वरी देवी

पशुपतीश्वर के पीछे अमृतेश्वर के पास भगवती अमृतेश्वरी देवी हैं। वहीं अमृतकूप में स्नान कर देवी का दर्शन करने वाले को अमृत-तत्व की प्राप्ति होती है। यह देवी दाहिने हाथ में अमृतघट और बाएँ हाथ से अभय देने वाली देवी हैं। इनका दर्शन-पूजन करने से मनुष्य अवश्य ही अमृततत्व को प्राप्त करता है।

सिद्धिलक्ष्मी, कुब्जा देवी, त्रैलोक्य सुन्दरी गौरी

अमृतेश्वरी देवी के पश्चिम ओर प्रपितामहेश्वर के सम्मुख जगद्-मात-सिद्धिलक्ष्मी विराजती हैं। इनकी पूजा करने से सर्व सिद्धियों

की प्राप्ति होती है। भगवती का कमलाकृति वाला 'लक्ष्मीविलास' नामक मन्दिर है। इस मन्दिर को देखने मात्र से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। प्रपितामहेश्वर के पश्चिम ओर नलकूबरेश्वर के सामने कुब्जा देवी की पूजा करनी चाहिये। नलकूबरेश्वर के पश्चिम में कुब्जाम्बेश्वरी लिंग है। उसी स्थल पर त्रैलोक्य सुन्दरी गौरी परम पूजनीय हैं त्रैलोक्य सुन्दरी देवी, त्रैलोक्य भर की सुन्दर सिद्धियों को सदा देती हैं। इनकी पूजा करने से कभी वैधव्य नहीं सहन करना पड़ता। साम्ब्रादित्य के पास 'दीप्ता' नामक महाशक्ति का पूजन करने से मनुष्य 'लक्ष्मी' से सदा देदीप्यमान रहता है।

महालक्ष्मी, हयकण्ठी देवी और कौर्मी देवी व शिखीचण्डी

श्री कण्ठेश्वर के समीप में जगद्धात्री महालक्ष्मी देवी विराजती हैं। लक्ष्मी-कुण्ड तीर्थ में स्नान करके भगवती का पूजन करना चाहिए। तीर्थ में पितरों को तपण करे और वहाँ विविध प्रकार का दान करने वाला सदैव लक्ष्मीवान बना रहता है। साधकों के लिए परम सिद्धि-दायी का महापीठ है। इस स्थल पर मन्त्र-सिद्धि अनायास ही होती है। वैसे तो काशीपुरी में सिद्धि देने वाले अनेक पीठ हैं पर महालक्ष्मी पीठ के समान लक्ष्मी-प्रदाता अन्य कोई पीठ नहीं है। कुआर वदी अष्टमी को लक्ष्मी-पीठ की यात्रा करने वाले का गृह 'महालक्ष्मी' की कृपा से सदा पूजित रहता है।

महालक्ष्मी के उत्तर ओर कुठारधारिणी हयकण्ठी देवी नित्य विघ्नरूपी वृक्षों को अपने कुठार से काटती रहती है। महालक्ष्मी के दक्षिण ओर कौर्मी शक्ति अपने हाथों में पाश लिए विराजमान है। यह देवी प्रतिक्षण क्षेत्र के विघ्नों को अपने पाश में बाँधती रहती हैं। इनका पूजन करने वाले क्षेत्र की सिद्धि प्राप्त करते हैं।

महालक्ष्मी के वायव्यकोण में शिखिचण्डी देवी यह देवी के समान पिहँकते हुए विघ्नरूपी सर्पों के समूह को सदा भक्षण किया करती है। इनका दर्शन कर लोग समस्त व्याधियों से मुक्त हो जाते।

भीमचण्डी देवी

भीमेश्वर के सम्मुख ही भगवती भीमचण्डी देवी अपने हाथ में पाश और मुग्दर धारण किये हुए आलस्य विहीन हो सदा काशी क्षेत्र की रक्षा में सन्नद्ध रहती हैं। जो मनुष्य भीम-कुण्ड में स्नान कर भीम-चण्डी देवी का दर्शन करता है वह पुण्यात्मा भीमाकृत्ति वाले यमराज का कभी दर्शन नहीं करते।

छागवक्रेश्वरी देवी

वृषभध्वज के दक्षिण ओर छागवक्रेश्वरी देवी विराजती हैं। यह देवी विघ्नों को सदा तरु-पल्लव की भाँति चवाया करती है इन्हीं की प्रसन्नता से ही मनुष्य को काशी में निवास मिल पाता है। अत: कुआर सुदी अष्टमी को इनकी पूजा करनी चाहिए।

तालजंघेश्वरी देवी

संगमेश्वर के दक्षिण ओर विकटानना, ताड़वृक्ष का शस्त्र धारण किए हुए भगवती तालजंघेश्वरी देवी हैं यह आनन्दवन के बीच में रहने वाले विघ्नरूपी वृक्षों को उखाड़-उखाड़ कर फेंकती रहती हैं। इनका पूजन करने वाले को कभी विघ्नों के बोझ से दबना नहीं पड़ता।

यमदंष्ट्रा देवी

उद्दालक तीर्थ पर उद्दालकेश्वर के दक्षिण और यमदंष्ट्रा देवी विघ्नों को सदा चबाती रहती हैं। इनकी पूजा करने वाले भक्त भले ही क्यों न बड़े पापी हों पर वह यमराज से कभी नहीं डरते।

चर्ममुण्डा और महारुण्डा देवी

दारुकेश्वर तीर्थ पर भगवान दारुकेश्वर के समीप में चर्ममुण्डा नामक देवी प्रसिद्ध हैं। इनका तालु और मुख मानों पाताल में, ऊपर

का ओठ आकाश में और अधर पृथ्वी में हो, देवी का रूप है। यह देवी ब्रह्माण्ड मात्र को मानों एक ग्रास (कवर) में खा जाना चाहती है। इनका पेट सुकठा, वसाओं से देह भरा हुआ है। यह देवी क्षेत्र के पूर्व ओर के सभी विघ्नों से सदा रक्षा किया करती हैं। इनके हाथ में खोपड़ी और काटने वाली छुरी रहती है। यह हजारों भुजा वाली और जाज्वल्यमान हैं। इनकी तिरछी दृष्टि शोभायमान रहती। इनकी भुजा मानों समुद्र पर्यन्त फैलती है और शत्रुओं को उसमें लड्डू के समान धारण किए रहती है। यह बाघ के चर्म को धारण किए रहती हैं। सदा कठोर अट्टाटहास किया करती है।

यह देवी दुरात्मा क्षेत्र द्रोहियों को अपने त्रिशूल से भेदते हुए पापियों की हड्डियों को मृणाल की भांति चबाया करती हैं। इनका 'भूषण' मुण्डमाला है और स्वरूप बड़ा भयंकर है। देवी को प्रणाम करने वाला कभी विघ्नों से पीड़ित नहीं होता।

चामुण्डा

चर्ममुण्डा की ही भांति महारुण्डा भी हैं। इन दोनों में इतना ही अन्तर है कि चर्ममुण्डा तो मुण्डमाल धारण करती हैं और महारुण्डा धड़-माल धारण किये रहती हैं। यह दोनों बड़ी बल-शालिनी देवियाँ आपस में अपने हाँथ फैलाकर तालियाँ बजाते हुए हँसती रहती हैं और इस प्रकार देवी काशी क्षेत्र को विघ्नों से बचाती रहती हैं।

हयग्रीव तीर्थ पर लोलार्क से उत्तर ओर भक्तों के विघ्नों का नाश करने वाली प्रचण्डानना भगवती महारुण्डा देवी वास करती हैं।

चर्ममुण्डा और महारुण्डा दोनों के बीच में मुण्डरूपिणी एक चामुण्डा देवी भी हैं। अतः क्षेत्र निवासियों को चाहिए कि उक्त तीनों देवियों का दर्शन करें। यह तीनों देवियाँ अपने भक्तों को सदा धन-धान्य, पुत्र-पौत्रों से परिपूर्ण किये रहती है।

श्री स्कन्द ने आगे कहा कि हे अगस्त्य ! ये सभी देवियाँ श्रद्धापूर्वक पूजन, दर्शन, स्पर्शन, नमन और स्मरण करने वाले अपने भक्तों के उपद्रवों को नाश करते हुए उन्हें 'मुक्तिश्री' की उपलब्धि कराती रहती हैं।

स्वप्नेश्वरी व स्वप्नेश्वर

महारुण्डा देवी के पश्चिम ओर शुभमयी स्वप्नेश्वरी देवी हैं। यह देवी भक्तों को स्वप्नावस्था में शुभा-शुभ का ज्ञान करा देती हैं। किसी भी दिन असिसंगम पर स्नानादि कर पवित्र हो स्वप्नेश्वरी देवी और वहीं विराज रहे 'स्वप्नेश्वर' का पूजन कर उपवास करते हुए भूमि पर वहाँ शयन करने वाले स्त्री हों या पुरुष, स्वप्नावस्था में भविष्य की घटनाओं को देखते हैं। स्वप्नेश्वरी देवी रात्रि के स्वप्ना-वस्था में भूत, भविष्य और वर्तमान की सब बातें कह देती हैं।

काशीपुरी में ज्ञान प्राप्त करने वाले को अष्टमी, चतुर्दशी, नवमी को दिन या रात में स्वप्नेश्वरी देवी का पूजन करना चाहिए।

भगवती दुर्गा

स्वप्नेश्वरी के पश्चिम भाग में भगवती 'दुर्गा देवी' का स्थान है। वहाँ पर रहते हुए भगवती 'दुर्गा' दक्षिण भाग में समस्त विघ्नों का नाश करते हुए काशी क्षेत्र की रक्षा में सदा तत्पर रहती हैं।

इस प्रकार स्कन्द पुराणान्तर्गत चतुर्थ काशी खण्ड में 'देवी-स्थान' वर्णन नामक ७० वें अध्याय का भाषा में अनुवाद किया गया।

(देवी का 'दुर्गा' नाम क्यों पड़ा और दुर्गासुर-वध आदि की कथा अगले अंक में)

कृत्तिवासेश्वर

'भगवान कृतिवासेश्वर' की प्राकट्य लीला का प्रसंग हमें इस ग्रंथ के अध्याय ६८ में देखने व पढ़ने को मिलता है और साथ ही हंस तीर्थ के उद्भव और वहाँ की तीर्थ महिमा का भी यथार्थ ज्ञान उसी अध्याय में होता है।

काशी के इस पवित्र स्थान कृत्तिवासेश्वर मन्दिर पर सन् १६५६ में मुगल बादशाह औरंगजेब के काल में भगवान के मन्दिर को तोड़ा गया और उस स्थान पर 'आलमगिरी' मसजिद बनवाई गयी तथा कृत्तिवासेश्वर लिंग को समाप्त कर उस स्थान पर एक फौवारा बनवा दिया गया तथा भगवान के अर्घे की जलहरी को फौवारे का जलाशय बनवाया गया जो आज भी है। इस स्थान पर हिन्दु लोग स्थान-पूजा हेतु जाते हैं। विशेषकर महा-शिवरात्रि के दिन अधिक यात्रियों की भीड़ वहाँ रहती है। श्रावण मास भर और चैत्र की पूर्णिमा को भी भीड़ पूजनार्थ वहाँ जाती है।

बनारस के जिटियर पृष्ठ २५३ में इस प्रकार इसका विवरण प्रकाशित है।

श्री बालमुकुन्द वर्मा जी ने अपने ग्रंथ के पृष्ठ ६ पर लिखा है कि आलमगिरी मसजिद कृत्तिवासेश्वर मंदिर के खम्भों, ईट पत्थरों और मसाले से बनी है। मसजिद में तीन कतार में खम्भे हैं।

नये कृत्तिवासेश्वर की स्थापना के बाद जो कि तीर्थ के पश्चिम तट पर स्थित है मूर्ति का दर्शन-पूजा श्रृंगार आदि का क्रम चल रहा है। यह स्थान पहले बड़ा ही खुला तथा फुलवाड़ी-युक्त रहा परन्तु अब तो ऋणहरेश्वर और रत्नेश्वर के बीच मार्ग में जाने पर वहां कोई मन्दिर है ऐसा बाहर से पता ही नहीं लगता। १५ वर्ष पहले तक लोग सड़क पर से ही दर्शन कर लेते थे। भगवान की मूर्ति विशाल है। इस मन्दिर की रिक्त भूमि पर

निर्माण कर आय का साधन बनाया गया है। आय का कैसे क्या होता है यह प्रभु ही जाने व समझें।

हंस-तीर्थ की विशालता का आभास सन् १८२२ में तत्कालीन जिलाधीश प्रिंसिप महोदय द्वारा बनवाये गये काशी के नक्शे में दृष्टिगोचर होता है। ५०-६० वर्ष पूर्व बने नयी सड़क अर्थात् 'हरतीर्त' क्षेत्र को बीच से दो भागों में विभक्त करते हुए पीलीकोठी की ओर जाने के लिए बनी तो इस तीर्थ के कुछ भाग को पाट कर उस पर सड़क बना लिया गया है। शेष भाग सुन्दर रूप में रहा। परन्तु अब वह भी काल के गाल में अपने ही द्वारा ग्रसित हो गया और आज इस दशा में दृष्टिगोचर होने लगा है कि वहाँ तीर्थ का कोई अस्तित्व ही नहीं रह गया पूरा तीर्थ पाट दिया गया।

इस हंसतीर्थ का ही प्रताप है कि मैं 'काशी खण्ड' के इस प्रकाशन की ओर लगा। यह वृत्तांत भी रोचक है अतः उसे यहाँ लिपिबद्ध करना आवश्यक समझता हूँ।

इस हंसतीर्थ (हरतीरथ तालाब) के संबंध में वाराणसी के दीवानी न्यायालय में एक मुकदमा (वाद) धार्मिक जनता के ७ प्रतिनिधियों और नगर पालिका व इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट के बीच चल रहा था। उस समय नगर महापालिका नहीं बनी थी। नगर पालिका व ट्रस्ट की ओर से काशी के प्रमुख वकील (अधिवक्ता) श्री शंकरसरन, मौलवी अतहर, श्री चतुर्भुज दास पारिख आदि प्रमुख थे और जनप्रतिनिधियों की ओर से श्री हरिशंकर सिंह, श्री रामअधार सिंह व श्री शीतला प्रसाद जी पैरवी कर रहे थे। एक दिन एक प्रतिनिधि पं० रामबहाल मिश्र मुझसे न्यायालय में मिले और तीर्थ को बचाने के लिए अनुरोध किया। उनके कहने पर मैंने मिसिल देखी और न्यायाधीश श्री पी० एस० वर्मा द्वारा यह कहे जाने पर कि १८८३ से पूर्व के नक्शे में इस तालाब हरतीर्थ को दिखा दें तो मैं वादी के पक्ष को समझूँ। यह बात मुझे लगी। तदनुसार प्रिंसिप का १८२२ का नक्शा जो कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला भवन में सुरक्षित है से

'तीर्थ' मात्र का फोटो लेकर न्यायार्थ प्रस्तुत कराया और सात दिन तक होने वाली बहस में पूरे मनोयोग पूर्वक भाग लिया तथा महापालिका के इस तर्क को निरस्त किया कि हंस तीर्थ तालाव, फौवारे वाली मसजिद में स्थित फौवारे का हौज है।

विद्वान् न्यामयूर्त्ति के समक्ष इसके उत्तर में मेरे सुझावानुसार जिस समय श्री हरिशंकर सिंह ने तर्क उपस्थित किया कि शिवलिंग भूमि पर स्थापित होता है जल में नहीं। गजेटियर पृष्ठ २५३ के अनुसार इस हौज के बीच के फौवारे को कृत्तिवासेश्वर लिंग मान कर लोग पूजन करते हैं अतः हौज लिंग की जलहरी है न कि पटे हुए इंसतीर्थ का शेष अंश। इसी संदर्भ में काशी खण्ड के अध्याय ६८ के श्लोक के अनुसार यह तर्क प्रस्तुत किया गया कि हंस तीर्थ कृत्तिवासेश्वर के समीप है न कि कृत्तिवासेश्वर मन्दिर (आलागिरी मसजिद) में।

विद्वान न्यायाधीश श्री पी० एस० वर्मा ने अपने निर्णय में काशी खण्ड के उक्त श्लोक को उद्धृत करते हुए हमारे तर्क को मानकर निर्णय जन-प्रतिनिधियों के पक्ष में दिया कि तीर्थ के उत्तरी दिवाल को नगरपालिका अपने खर्चे से बनवावे तथा गंदगी को साफ कर तीर्थ को स्वच्छ करे अन्यथा दो माह बीतने पर जनप्रतिनिधि स्वयं बनवाए और सारा खर्चा नगरपालिका से वसूल करें।

इस निर्णय की अपील उच्चन्यायलय में महापालिका ने की। ठाकुर राम सुमेर सिंह के मरने के वाद कुछ तथाकथित जन प्रतिनिधियों ने वादियों को मिलाकर समझौता करा दिया और उस तीर्थ को पाट कर छोटा कुण्ड बनाने की बात मान लिया। काशी में हंस तीर्थ नाम स्मरण मात्र रह गया तीर्थ आचमन-मार्जन स्नान से वंचित समाज इसे भगवान् की लीला ही समझ रहा है।

हंसतीर्थ का नाम अपभ्रंश होकर हरतीरथ हो गया है। वैसे हरतीर्थ का अर्थ होता है शंकर का तीर्थ। हरतीरथ महल्ला बड़ा है यह

विश्वेश्वर गंज से गोल गड्डा जाने वाले मार्ग के कारण दो भागों में बट गया है।

हंसतीर्थ तालाव की सफाई लगभग ४४-४५ वर्ष पूर्व हुई थी उस समय मैं बहुत छोटा था। मैं स्वयं नीचे तक गया था मशीन से पानी उपर निकला जाता था। सड़ककी सतह से यह तीर्थ का जल लगभग ३०-४० फुट नीचे रहा। पूर्वोत्तर भाग में एक बहुत बड़ी बावली देखी। यह बावली लगभग २०-२५ फुट के व्यास में थी। बावली मुख के ऊपर लोहे के मोटे तावा व पत्थर से उस को बन्द कर दिया गया था पहले से ही। उसे खोलने की हिम्मत नहीं थी। क्योंकि उस समय मैंने सुना कि इसमें से पाताल से भारी जल की धार निकलती है। यह जल सारे विश्वेश्वर गंज को बहा देगा इसी लिए इसे लोहे की मोटी पट्टी व पत्थर से बन्द कर दिया गया है।

उस समय की इस बात को हम इस ग्रंथ के ६८ वें अध्याय की उस पंक्ति से मिलान करते हैं कि गजासुर की त्रिशूल में वेंध कर भगवान ने त्रिशूल को भूमि में गाड़ दिया था और त्रिशूल उसके बोझ से इतना धंस गया था कि उखाड़ने पर पाताल से जल की धारा निकल पड़ी और वही हंसतीर्थ बन गया जो बाद में कौओं की घटना के कारण हसतीर्थ नाम से विख्यात हो गया।

अत्यन्त दु.ख की बात है कि काशी का यह उत्तमतीर्थ पाट दिया गया वह बावली व लोहे की मोटी परत सब मिट्टी में दब गयी। काशी का यह विशाल और गहरा तीर्थ पाट दिया गया। भगवान की कृपा से ही यह कभी अपने आस्तित्व को प्राप्त होगा। जो कोई कार्य मुगलकाल में नहीं हुआ उसे नगर महापालिका ने सफाई न कर उच्चन्यायालय में हुए समझौते के अनुसार पाट दिया है उपवन व २०×२० फुट का कुण्ड कब बनेगा देखना है।

मत्स्योदरी तीर्थ

मत्स्योदरी तीर्थ अधिकांश भाग में पट गया है। थोड़ा सा भाग उप-वन के बीच दृष्टिगोचर है। जल दूषित होने पर भी यहाँ लोग स्नानादि

करते हैं। इस वर्ष उपवन का तो कुछ सुधार हो रहा है पर जल की सफाई की ओर अभी ध्यान नहीं दिया गया।

मत्स्योदरी तीर्थ उपवन के पश्चिमी द्वार पर गायघाट की रामलीला के चित्रकूट आदि की लीला आश्विन मास में होती है।

मत्स्योदरी उपवन का आधा भाग राजा बलदेव दास विड़ला अस्पताल ने ले लिया है। इस प्रकार इस तीर्थ स्थली में जनता जनार्दन की सेवा का पुण्य कार्य हो वहाँ रहा है। विड़ला जी का यह अस्पताल जिस रूप में इस क्षेत्र में होना चाहिए उस रूप में नहीं है। नगर की अधिकांश गरीब जनता इस क्षेत्र में रहती हैं। विड़ला परिवार से अनुरोध है कि इस अस्पताल का शीघ्र विस्तार कर जन सेवा के महत् पुण्य का भागी बने। इस अस्पताल में नेत्र चिकित्सा कराने वालों की भारी भीड़ शीतकाल में लगी रहती है। चाहे भी जो हो नगर की स्थिति देखते हुए इस अस्पताल को सर्व साज-सज्जा के साथ सम्पन्न होना जन सेवा की दृष्टि से शीघ्र अनिवार्य हैं।

इस अस्पताल का 'घंटाघर' क्षेत्र के लाखों व्यक्तियों को समय की सूचना देकर घोर उपकार करता है। इस घंटे की आवाज सुनकर लोग यही कहते हैं कि "मछोदरी कऽ घण्टा एतना बजउले हौ" या विड़ला के के घण्टे में इतना वजा है आदि"

मत्स्योदरी तीर्थ को और सुन्दर स्वरूप प्रदान करने की अपेक्षा है।

मत्स्योदरी तीर्थ पर भगवान कामेश्वर महादेव का मन्दिर अवस्थित है। पूर्व ओर एक भाग में इस तीर्थ के पूर्व-दक्षिण भाग में श्री स्वामी नारायण जी का विशाल एवं दर्शनीय मन्दिर तीर्थ की शोभा को बढ़ा रहा है।

श्री स्वामिनारायण मन्दिर

मत्स्योदरी तीर्थ पर गायघाट महाल की सीमा पर 'श्री स्वामिनारायण मंदिर अत्यन्त रमणीय है। इस मंदिर के पीछे दो सो वर्ष का इतिहास है।

'श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के प्रवर्तक भगवान् स्वामिनारायण साक्षात् 'श्री कृष्ण' का अवतार माने जाते हैं। उनका दूसरा नाम 'श्री सहजानन्द स्वामी' था। उनका जन्म संवत् १८३७ चैत्र शुक्ल नवमी के दिन उत्तर प्रदेश के गोंडा मण्डलान्तर्गत 'छपैया' गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम धर्मदेव और माता का नाम भक्तिदेवी था। माता-पिता के स्वधाम गमन के बाद ११ वर्ष की अल्पायु में ही भगवान् स्वामिनारायण ने तीव्र वैराग्य-वशात् गृह त्याग किया। हिमालय में मुक्तिनाथ क्षेत्र में गण्डकी नदी के तीर पर घोर तपश्चर्या की, तत्पश्चात् सात वर्ष तक पूरे भारत की यात्रा करके सौराष्ट्र में 'उद्धवावतार' माने जाने वाले श्री रामानंद स्वामी से दीक्षा ली। उनमें ऐसा अलौकिक प्रभाव था कि उनके दर्शन मात्र से लोगों को समाधि लग जाती थी और अपने-अपने इष्टदेव के रूप में भगवान् स्वामिनारायण का दर्शन करते थे। उनके अलौकिक चमत्कारों को देखकर लाखों लोग उनके अनुयायी हुए और साक्षात् नारायण के अवतार के रूप में उनको मानने लगे। भगवान् स्वामिनारायण ने चमत्कारों की अपेक्षा समाज सुधार, शिक्षा, अन्नदान, सात्त्विक उत्सवों एवं अहिंसामय यज्ञों के प्रचार आदि पर ज्यादा जोर दिया। कई भयकर चोर-डाकू उनके भक्त बनकर सभ्य जीवन बीताने लगे। इस प्रकार अल्प समय में पूरे गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश में श्री स्वामिनारायण संप्रदाय फैल गया। इस संप्रदाय की दो प्रमुख गद्दी गुजरात में बड़ताल एवं अहमदाबाद में है।

काशी स्थित श्री स्वामिनारायण मंदिर बड़ताल की लक्ष्मी नारारण देवकी गद्दी के अन्तर्गत है।

बचपन में भगवान स्वामिनारायण का नाम घनश्याम था। संप्रदाय के 'श्री हरि दिग्विजय' ग्रंथ एवं परंपरागत कथानक के अनुसार भगवान् स्वामिनारायण जब आठ वर्ष के थे तब पिता धर्मदेव के साथ काशी आये थे। और यहाँ के मणिकर्णिका स्थित प्रसिद्ध गोमठ में ठहरे थे। वहाँ विद्वानों की सभा हुई थी जिसमें बालक घनश्याम की विद्वत्ता देखकर सभी विद्वान्

अत्यन्त प्रभावित हुए थे। तत्पश्चात् भगवान् स्वामिनारायण ने अपने पिता के साथ काशी के सुप्रसिद्ध तीर्थ मत्स्योदरी तीर्थ में एवं गऊघाट पर स्नान किया था। इसी पुण्य-स्मृति में यह मंदिर बना है। मंदिर के लिए यह जमीन तो लगभग १५० वर्ष पूर्व ली गयी थी लेकिन मंदिर की प्रतिष्ठा आज से करीब पैंतीस वर्ष पूर्व संवत् १९९८ (ई० १९४२) में हुई।

इस मंदिर का प्रमुख उद्देश्य भगवान् स्वामिनारायण की काशी-यात्रा की 'पुण्य-स्मृति' का संरक्षण, दूर से आये यात्रियों की सेवा, एवं संत विद्यार्थियों की व्यवस्था, द्वारा सद्विद्या का प्रचार करना है।

शिल्प एवं सुन्दरता की दृष्टि से 'स्वामिनारायण मंदिर' काशी के प्रमुख चार पांच मंदिरों में से एक है। सरसरी निगाह से देखने पर उत्तराभिमुख स्थित यह मंदिर सुन्दर रथाकार प्रतीत होता है। मंदिर के चारों ओर भगवान् के प्रमुख अवतारों, शकर-पार्वती, सरस्वती, गगा यमुना, यम और इन्द्र की सुन्दर प्रतिमाएँ चित्ताकर्षक हैं।

निज मन्दिर

मुख्यमंदिर जिसको निज मंदिर कहते हैं तीन शिखरों वाला है। जिनमें पूर्व-खण्ड में श्री विश्वनाथ जी एवं पार्वती जी विराजमान हैं। मध्य-खण्ड में भगवान् स्वामिनारायण एवं भगवान श्री लक्ष्मी नारायण देव की अष्ट धातुओं से निर्मित्त रमणीय प्रतिमाएँ दर्शनार्थी के मन को बरबस आकर्षित कर लेती है और अपूर्व शांति प्रदान करती है। मंदिर के पश्चिम खण्ड में भगवान् की सुख शय्या रखी गई है और श्रीराधा कृष्ण एवं भगवान् स्वामि नारायण की सुन्दर चित्र प्रतिमाएँ हैं। मंदिर में प्रतिदिन भगवान् का पूजन एवं नूतन शृंगार होता है। मंदिर के उत्तर प्रवेश द्वार की सोपान श्रेणी के पास श्री हनुमान जी एवं गणेश जी के मन्दिर में शिव-विष्णु आदि सर्व देवों के सुभग समन्वय देखने को मिलता है जो सर्वदेवों के प्रति आदर भावना रखने वाले स्वामिनारायण संप्रदाय की प्रमुख विशेषता है।

मंदिर में सन्त छात्रावास भी है। जहाँ कई विद्वान संत-महात्मा रहते हैं, एवं विद्याध्ययन करते हैं। मंदिर में आगन्तुक यात्रियों के लिए आवास एवं भोजन का सुन्दर प्रबन्ध है। एक गोशाला भी है। भगवान् के लिए एक छोटा-सा उद्यान भी है। मंदिर के प्रबन्ध के लिए संप्रदाय की बड़ताल गद्दी के प्रमुख ट्रस्टिओं द्वारा महन्त नियुक्त किये जाते हैं। जिनका प्रति तीन वर्ष के बाद स्थानान्तरण होता है। वर्तमान समय में। मन्दिर का सारा प्रबन्ध महन्त स्वामि श्रीनारायण वल्लभ दास जी एवं कोठारी नारायण भगत कर रहे हैं।

काशी का कवाला (दस्तावेज) काशी-खण्ड

न्यायालय के निर्णय ने मुझे बाद में प्रेरणा दी कि मैं सम्पूर्ण काशी खण्ड पढ़ूँ और देखूं कि इसमें क्या है ? ग्रंथ लाकर उसे पढ़ना प्रारम्भ किया तो पाया कि इस में तो हमारे देवी-देवताओं, तीर्थों, धर्म-कर्मों, काशिराज का स्वरूप तथा उनका धर्म-शासन, उत्तम मार्ग-दर्शक के रूप में है। यदि इसे 'काशी का कवाला' कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। जो-जो भावनाएँ उठीं उसे भगवान व्यक्त करा रहे हैं। यह शरीर उन्हीं की छत्र छाया में उत्पन्न हुआ, पला-पुसा उन्हीं के कार्य में अन्त तक लगा रहे यही कामना है।

लेखक का यह सौभाग्य है कि उसने हंसतीर्थ के पूर्व कतुआ पुर स्थित ननिहाल में जन्म लिया और निकट ही विश्वेश्वर गंज के पूर्व मत्स्योदरी के तट पर निवास स्थल है। इस नाते हंसतीर्थ, कृतिवासेश्वर के प्रति ममता जगी और कई मास तक मुकदमें की पैरवी कर उसे जीता। इस कार्य में महामृत्युंजय के अध्यक्ष पं० केदार नाथ दीक्षित ने अधिक प्रोत्साहन दिया।

विश्वेश्वर गंज

विश्वेश्वर गंज महल्ला कोतवाली क्षेत्र का ४४वाँ नम्बर महाल है। यह मन्दाकिनी और मत्स्योदरी तीर्थ के संगम स्थली भैरवनाथ-महामृत्युंजय वाली

चौमुहानी से पूर्व मार्ग पर दाहिनी ओर के आगे का सारा क्षेत्र विश्वेश्वरगंज कहा जाता है।

रत्नेश्वर-क्षेत्र में भगवान विश्वनाथ निवास करते थे। उसी समय गजासुर वध उन्होंने किया था। भगवान विश्वनाथ का मन्दिर कहाँ था यह अभी शोध का विषय बना है। एक स्थान विश्वेश्वरगंज चौमुहानी (सट्टी वाली) पर चैतन्य-मठ नाम से विख्यात है इसमें का कोई मन्दिर है या नहीं कहना कठिन है। चैतन्य मठ गुरु नानकदेव के विरक्त महात्मा निर्मल सम्प्रदाय का विशाल मठ है। ऐसा लगता है कि भगवान विश्वनाथ की स्थली समझ कर ही उसकी रक्षा हेतु हिन्दुधर्म-रक्षक सिख-स्वामी ने स्थान बनाकर वहाँ की रक्षा कर रहे हैं। अभी किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा गया है कि कौन सा पूर्व स्थान है।

विश्वेश्वरगंज में ही अन्नपूर्णा गंज में भगवती अन्नपूर्णा विराज रहीं हैं। पीछे कालराज (काशी के कोतवाल) का मंदिर आज भी विख्यात है। आपकी ड्योठी पर ही भौतिक शासन की कोतवाली स्थित है। दण्डपाणि कालराज के समीप हैं। तात्पर्य यह है कि भगवान जहाँ-जहाँ काशी में निवास किये वहाँ वहाँ भैरव आदि का मन्दिर है, जैसे ज्येष्ठेश्वर के समीप ज्येष्ठा गौरी और भूत भैरव है, शैलपुत्री क्षेत्र में भगवान शैलेश्वर व शैलपुत्री तथा कपाल भैरव विराज रहे हैं।

कृत्तिवासेश्वर का नवीन मन्दिर पाण्डेपुर के राय श्रीकृष्ण के पूवर्जों ने अपनी भूमि पर बनवाया तथा हंसतीर्थ को भी बनवाया था।

———

६८ आयतनों, देवियों और तीर्थों के वर्तमान स्थान

कृत्तिवासेश्वर—प्राचीन स्थान आलमगिरी मसजिद के० ४६/३८ और वर्तमान मन्दिर मकान सं० के ४६/२३ में है।

लोमशेश्वर—
मालतीश्वर—
अंतकेश्वर—
जनकेश्वर—
असितांगभैरव

} वृद्धकाल के घेरे में

शुष्कोदरी देवी—
बैताल—
वेताल कुण्ड—

} हरतीरथ में आलमगिरी मसजिद के उत्तर अब लुप्त वेतालेश्वर की नयी मूर्ति वहीं स्थापित हुई है।

वृष रुद्र—कृत्तिवासेश्वर मन्दिर में मूर्ति रखी है म० सं० को० ४६/१४६

मणिप्रदीप नाग—
मणिप्रदीप कुण्ड—

} हरतीरथ के उत्तर दुल्लीगड़ही नाम से विख्यात है अब पट गया। वहीं मणिप्रदीप नाग मन्दिर भी है।

सन्निहत्या—कुरुक्षेत्र के बगल में।

कुरु क्षेत्र—प्रसिद्ध है लोलार्क कुण्ड के पश्चिम।

महानादेश्वर—आदि महादेव के मन्दिर में त्रिलोचन के पूर्व।

महोत्कटेश्वर—कामेश्वर महादेव के घेरे में (मत्स्योदरी तट पर)

महादेव—त्रिलोचनके पूर्व ओर प्राचीन स्थान राजघाट किलेके पश्चिम लुप्त है।

पितामहेश्वर—शीतला गली में म० सं० सी० के० ७/९२ फाटक के भीतर

चण्डीश्वर—सदर बाजार चण्डी देवी के मन्दिर में

नीलकण्ठेश्वर—१—केदार जी घेरे में मं० स० बी० ६/९९। २—ब्रह्मनाल के समीप मं० सं० सी० के० ३३/८३

उर्ध्वरेता—कूष्मांड विनायक, फुलवरिया गाँव में।

श्री कण्ठेश्वर—श्री कंठलिंग नाम से लक्ष्मीकुण्ड पर

कपर्दीश्वर—पिशाचमोचन तीर्थ के पूर्व में।

सूक्ष्मेश्व—धूपचण्डी देवी के पीछे, विकटद्विज विनायक के सामने जे० १२/१३४

जयंतेश्वर—भूतभैरव क्षेत्र में।

त्रिपुरान्तक—
कुक्कुटेश्वर— } १—अब दुर्गाकुण्ड स्थित दुर्गा मन्दिर के घेरे में। म७ सं० बी० २७/८

त्रिशूलीश्वर—२—वक्रतुण्ड विनायक के पास चौसट्टी घाट मं० सं० डी० २०/१८।

जटीदेव—जटीश्वर अब पातालेश्वर नाम से डी० ३२/११७ में

त्र्यम्बकेश्वर—बड़ादेवमहाल डी० ३८/२१ में।

रुद्रेश्वर—१—त्रिपुरा भैरवी मंदिर के पास डी० ५/२१ में
२—सुग्गी गड़ही पर लुप्त।

वृषेश्वर—वृषभेश्वर नाम से गोरखनाथ टिले पर मं० सं० को० ५८/७८

ईशानेश्वर—बाँसफाटक सिनेमा के उत्तर सी० के० ३७/४७ में

संहार भैरव—पाटन दरवाजा में वर्तमान हैं।

उग्रेश्वर—लक्ष्मीकुण्ड पर। पहले ओंकार क्षेत्र में थे।

भवेश्वर—भीमचण्डी देवी के पास।

दण्डीश्वर—पचक्रोशी मार्ग में देहली विनायक के पूर्व।

कलशेश्वर—ब्रह्मपुरी (कश्मीरीमल हवेली के पीछे) मं०सं० सी०के०७/१०६

कालंलिग—कालेश्वर नाम से वरुणा सगम के पार शिव गणों ने स्थापित किया है।

पशुपतेश्वर—पशुपतीश्वर महाल में म० सं० सी० के० १३/६६

कपालीश्वर—कपालमोचन तीर्थ पर

नकुलीश्वर—विश्वनाथ के समीप अक्षैबट मंदिर में देवदानीश्वर नाम से

अमरेश्वर—लोलार्क के पास बी० २/२० में

भीमेश्वर—भीमचण्डी देवी के समीप

धरणिवाराह—क्षोणीवाराह नाम से दशाश्वमेध घाट पर डी० ५/२४ में

विरूपाक्षं—विश्वनाथ मन्दिर में शनैश्चरेश्वर नाम से बड़ा लिंग है।
हाटकेश्वर—हड़हा महाल में
तारकेश्वर—ज्ञानवापी पर गौरीशंकर मन्दिर के नीचे
किरातेश्वर—१—भारभूतेश्वर (राजादरवाजा) मं० सं० ५१/१५, गुप्तेश्वर नाम से। २—लालीघाट (केदारेश्वर के दक्षिण) जयन्तेश्वर के समीप।

नैऋत्येश्वर—पुष्पदन्तेश्वर के समीप
मरुकेश्वर— ,, ,,
जलप्रिय लिंग—मणिकर्णिका जलसांयी घाट पर गंगा में विलीन
कोटेश्वर—शैलेश्वर के दक्षिण में लुप्त है।
अनलेश्वर—१—त्रिलोचन मन्दिर में और २—मं० सं० डी० १०/४९ साक्षि विनायक पर।

त्रिलोचनेश्वर—प्रसिद्ध हैं त्रिलोचन घाट पर
ओंकारेश्वर—प्रसिद्ध हैं कोयला बाजार में।
विशालाक्षी—मीरघाट पर प्रसिद्ध हैं डी० ३/५८ में
ललिता देवी—ललिता घाट पर प्रसिद्ध हैं।
विश्वभुजा गौरी—धर्मकूप के पश्चिम डी० २/१३ में
वाराही देवी—मानन्दिर में प्रसिद्ध है। डी० १६/१४ में।
शिवदूती—स्वर्लिनेश्वर के समीप
महेश्वरी—विश्वनाथ जी की कचहरी के गलियारे में उत्तरी दीवाल में
ब्रह्माणी देवी—बालमुकुन्द चौहट्टा डी० ३३/६६–६७
नारायणी देवी—राजमंदिर में शीतला नाम से मं० सं० २०/१९ में शीतला घाट।

विरूपाक्षी गौरी—विश्वनाथ मन्दिर के नैऋत्यकोण छोटे मन्दिर में
शैलेश्वरी—(शैलपुत्री देवी)
चित्र घंटा—लक्खी चौतरा के सामने गली में म० सं० सी० के० २३/३४
चित्रग्रीवा—केदारेश्वर के समीप म० सं० बी० १४/११८

भद्रकाली—दुर्गा जी के मंदिर में, दुर्गाकुण्ड।
विधि देवी—अगस्त्येश्वर के अग्निकोण में
बंदी देवी—दशाश्वमेध डी० १७/१०० में
अमृतेश्वरी—स्वर्ग द्वार पर सी० के० ३३/२८ कुएँ के ऊपर
सिद्धिलक्ष्मी—मणिकर्णिका घाट पर सिद्धि विनायक के पीछे
कुब्जा देवी—मं० सं० सी० के० ७/९२ शीतला जी नाम से प्रसिद्ध है
त्रैलोक्य सुन्दरी गौरी—पितामहेश्वर के समीप
महालक्ष्मी—लक्ष्मीकुण्ड पर विख्यात हैं।
हयकण्ठी देवी—लक्ष्मी-कुण्ड पर काली मठ में डी० ५२/३५ (खिरनी पेड़ के नीचे)
शिखीचण्डी—लक्ष्मीकुण्ड डी० ५२/४० महालक्ष्मी मन्दिर में।
भीमचण्डी देवी—पंचक्रोशी में प्रसिद्ध हैं
छागवक्त्रेश्वरी—कपिलधारा में
महारुण्डा—लोलार्क के उत्तर म० सं० बी० २/१७ (अब दुर्गा जी के मन्दिर में काली जी नाम से)
चामुण्डा—मुण्डरूपिणी अर्क विनायक मंदिर में लोलार्क कुण्ड पर
स्वप्नेश्वरी—स्वप्नेश्वर के पास में
स्वप्नेश्वर—शिवाला घाट पर प्रसिद्ध और दूसरा स्थान लोलार्क पर बी० २/३३ में
दुर्गा देवी—दुर्गाकुण्ड

अन्य देवताओं, देवियों और तीर्थोंका पता सुलभ नहीं है। कुछके अस्तित्व ाप्त हो गये हैं। अतः ठीक-ठीक स्थानों का पता लगाया जा रहा है।

—:o:—

हर ! हर ! महादेव ! शम्भो

काशी विश्वनाथ गङ्गे

ॐ ॐ नमः शिवाय ॐ

न न

मः मः

शि शि

वा व

य ॐ नमः शिवाय य

अगला आकर्षण

दुर्गासुर-वध, दुर्गा विजय

ॐकारेश्वर का माहात्म्य

भगवान त्रिलोचनेश्वर

का प्राकट्य व

माहात्म्य वर्णन

श्री मत्स्योदरी तीर्थ की झाँकी

मत्स्योदरी तीर्थ पर
श्री स्वामिनारायण का भव्य मन्दिर